SAM
SPECTRUM '14

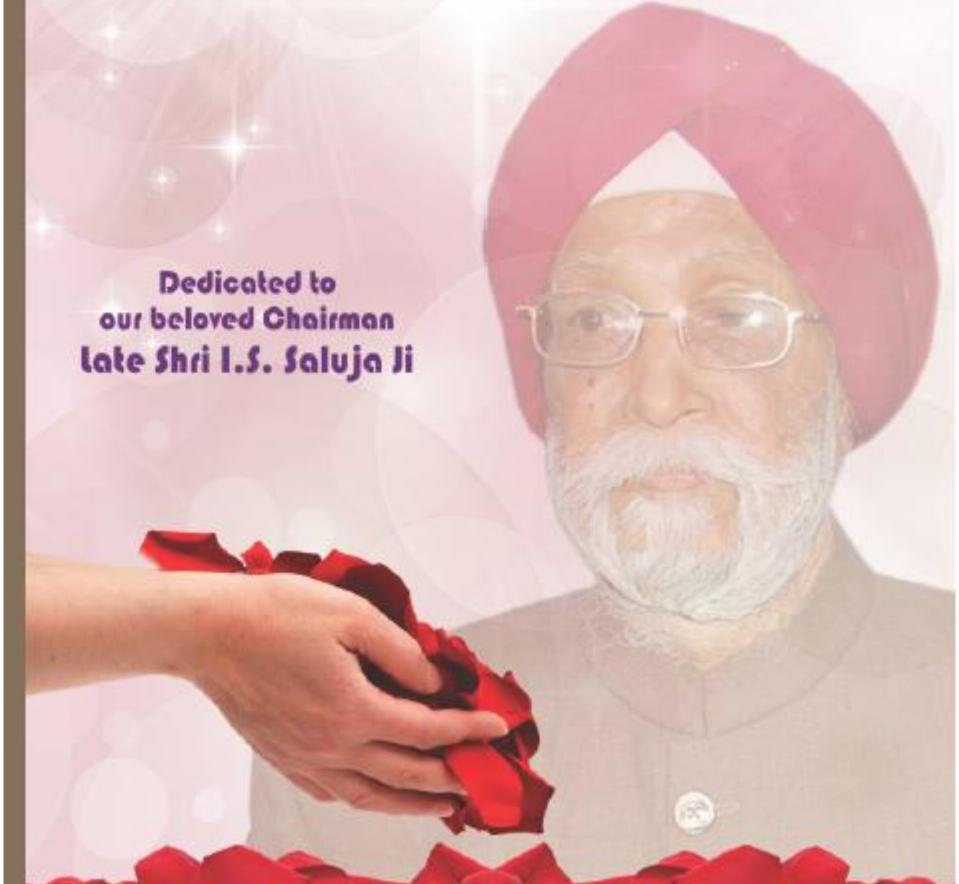

Dedicated to
our beloved Chairman
Late Shri I.S. Saluja Ji

SAM GROUP OF INSTITUTIONS, BHOPAL

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
स्वंयसिद्धा अलंकरण समारोह - 2014

राष्ट्रीय संगोष्ठी, 28-29 मार्च 2014

SAM
Group of Institutions

Visionary
Shri Harpreet Saluja
Chairman, SAM Group of Institutions

Beckon Lights
Mrs. Preeti Saluja
Executive Director, SAM Group of Institutions

Mr. Aviraj Chawla
Group Director, SAM Group of Institutions

Dr. V.P. Gupta
Dean, Academics, SAMCET

Dr. R.K. Ghai
Director SAMCOM

Dr. Dilpreet Sahni
Principal SAM College

Founder & Publisher
Shri Harpreet Saluja
Secretary Shri Guru Hargovind Society
Chairman Group

Editor
Mrs. Jyoti Pal

Editorial Board
Dr. Madhubala Shrivastava
Mrs. Sarita Agrawal
Mrs. Neha Dubey
Mrs. Durgesh Indoria
Mr. Nitin Kandle

Advisory Council
Dr. P.K. Mishra
Prof. & Head CRIM, BU Bhopal
(Ex. V.C. DAVV University, Indore)

Dr. U.C. Jain
Additional Director Higher Education, Bhopal

Prof. Surendra Singh Bakshi
Ex. Director, Shri Guru Teg Bahadur Khalsa
College, Jabalpur

Dr. Saroj Yadav
Head DESS, NCERT, New Delhi

Dr. Anil Kumar
Prof. of Education NITTTR, Bhopal

Dr. Hukum Singh
Former Prof. & Head DESM & Dean
NCERT, New Delhi

Prof. P.S. Mehta
Deptt. of Mech. Engg., IIT Chennai

Dr. A.K. Pandey
Director
M.P. Privat Universities Regulatory Commission
Govt. of M.P.

Dr. Arvind Dixit
Director D.P.I. Bhopal

Dr. Manju Singh
Prof. of Chemistry RGPV, Bhopal

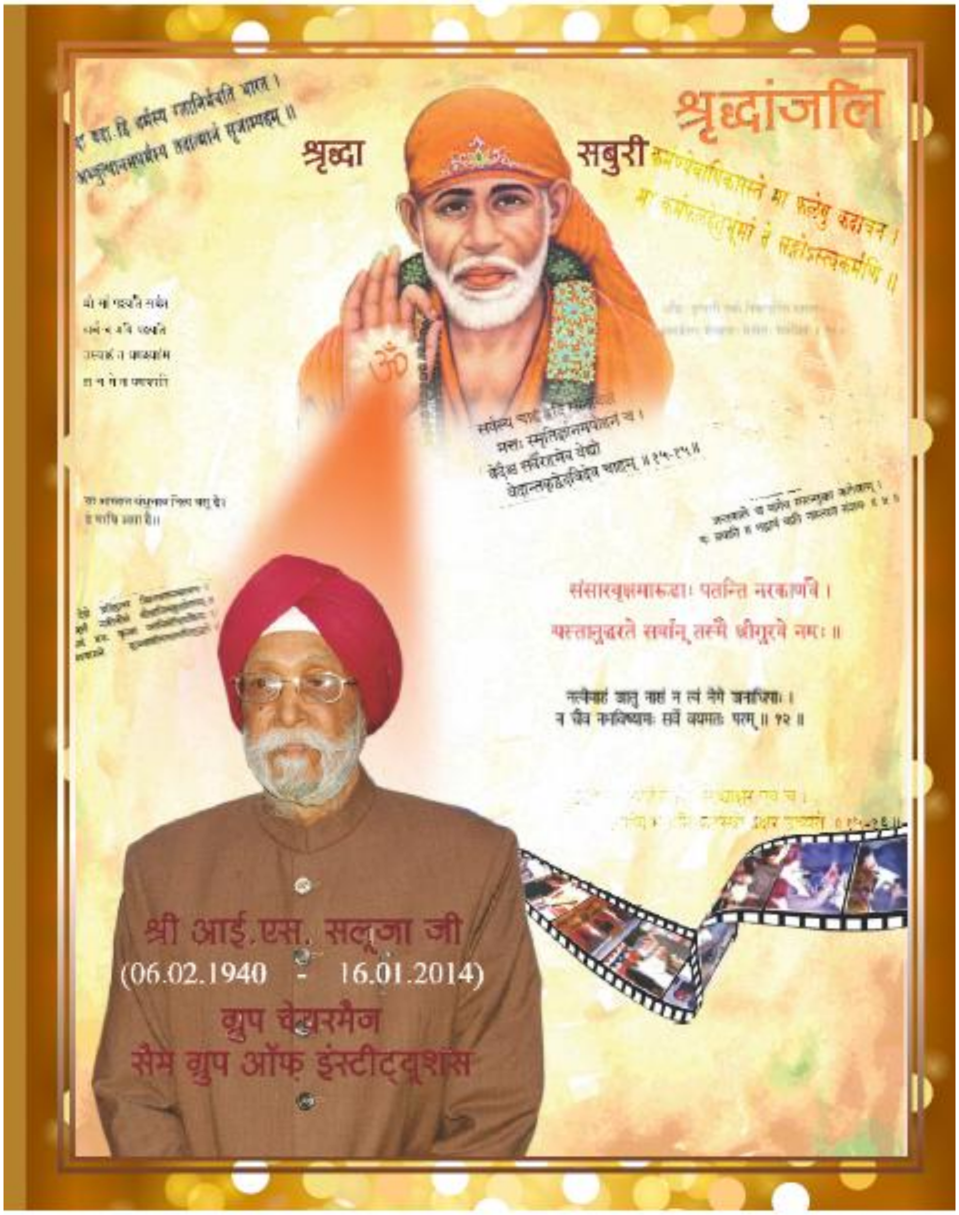

श्रद्धांजलि

श्रद्धा सबुरी

संसारवृक्षमारूढाः पतन्ति नरकार्णवे ।
यस्तानुद्धरते सर्वान् तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

नत्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव नभविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥

श्री आई.एस. सलूजा जी
(06.02.1940 - 16.01.2014)
ग्रुप चेयरमैन
सैम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

समारोह में
आपका हार्दिक स्वागत है।

SAM GROUP OF INSTITUTIONS
BHOPAL (M.P.)

Spectrum-2014

Light of Knowledge
Image of Success

Gram Adampur chhawni, Post kolua
Raisen Road, Bhopal
0755-4226300, 9826034400

sameducationcollege@gmail.com

राम नरेश यादव
राजभवन
भोपाल–462 052

GOVERNOR MADHYA PRADESH

Message

मुझे यह जानकर यह खशी हुई है कि सैम ग्रुप ऑफ इन्सटीट्यूशन भोपाल द्वारा एक बहुउद्देशीय एवं बहुरंगी पत्रिका ''सैम स्पेक्ट्रम'' का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का अवसर देने के उद्देश्य से स्मारिका का प्रकाशन सराहनीय है।

शिक्षा वास्तविक अर्थों में तभी सार्थक है, जब वह छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक हो। शैक्षणिक संस्थानों की पत्रिकाएं छात्र–छात्राओं की कलात्मकता एवं अभिरूचियों का प्रतिबिंब होती है। आशा है कि इस पत्रिका में सारगर्भित सामग्री समुचित रूप से प्रकाशित की जायेगी।

शुभकामनाएं।

(राम नरेश यादव)

Phone : 0755-4080170, 4080180, FAX: 0755-4080172

Shivraj Singh Chouhan
Chief Minister

Government of
Madhya Pradesh
BHOPAL-462004

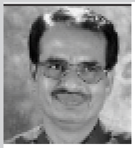

Message

I am happy to note that Sardar Ajeet Singh Memorial College, Bhopal is bringing out its college magazine SAM SPECTRUM.

The higher education, in the recent years is witnessing a lot of change in respect of approach to learning. Application of knowledge for economic benefits and confidence building become a priority. The State Government is taking all strategic initiatives to make higher studies job-oriented.

I hope the contributors to the SAM SPECTRUM would realize the importance and power of original thoughts.

Regards.

Shivraj Singh Chouhan

Message

उमाशंकर गुप्ता
मंत्री
तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास
उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश

ई-22/45 बंगले, टी.टी. नगर, भोपाल
दूरभाष
निवास : 0755-2770120
मंत्रालय : 0755-2441193
फैक्स : 07552770103
विधान सभा : 0755-2523151

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी संस्था के द्वारा **''सैम स्पेक्ट्रम''** नामक पत्रिका, विगत कई वर्षों से प्रकाशित की जाती रही है।

आशा है कि पत्रिका में संस्था में संचालित पाठ्यक्रमों एवं अन्य गतिविधियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होगी। पत्रिका विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

(उमाशंकर गुप्ता)

विश्वास सारंग (बी.ई.)
विधायक

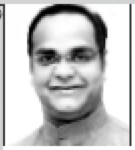

Message

Motivation and guidance at every step are essential factors for further development of personality. Since the Management Committee of the Institution, staffs, alumni and faculty are there to guide them for their progress so hereby I extend my best wishes to them on the occasion of publication of the seventh edition of the annual magazine **'SAM SPECTRUM'.**

Publication of annual magazine like **'SAM SPECTRUM'** is not merely a good collection of articles, stories and achievements of the institute but also reflects their calibre and potentialities. It ultimately helps to the cause of Nation-Building.

Madhya Pradesh, in general, and Bhopal, in particular, should feel indebted to **Sardar Ajeet Singh Memorial College, Bhopal** as it has provided plenteous academic & job opportunities to our nation's young buds. Undoubtedly, it has played its role in making Bhopal an Education Hub.

Education is like a seed, the way you nurture it you can reap good crop. As seed can't be grown merely by watering, it also needs fertilizers and proper care so is with Good Education. Besides teaching such type of magazine and other recreation activities are part & parcel.

I wish this magazine will prove to be a milestone in motivating them and equally fortuitous in the path of their destination.

Let's hope for sustainable success of the institute and students as well.

प्रो. निशा दुबे
कुलपति
Prof. Nisha Dubey
Vice Chancellor

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
होशंगाबाद रोड, भोपाल-462 026
BARKATULLAH UNIVERSITY
Hoshangabad Road, Bhopal-462 026

Message

I am pleased to know that Sardar Ajeet Singh Memorial college, Bhopal is publishing its annual magazine **"SAM SPECTRUM"** College Magazine is a way to promote the creative effort of students and faculty members. I feel that through college magazines society is also informed about the ongoing activities and trends persisting in the college. Students learn organization, cooperation and systematization through their involvement with the publication of college magazine.

I extend my good wishes to the entire family of SAM College for their creative and innovative effort.

(Prof. Nisha Dubey)
Vice - Chancellor
Barkarullah University
Bhopal

शब्द : निशब्द

घड़ी की टिक–टिक धीमी पड़ रही है। मुझे समझ आ रहा है....चलने का वक्त हो गया है। लेटे–लेटे बोरियत भी हो रही थी। आराम करने की आदत कभी रही नहीं न, इसलिये कोई मुझे साथ लेकर चलने का इशारा कर रहा है तो अच्छा ही है।

आँखों के अंदर अचानक तालाब भर गया है। अरे वाह! इसमें तो सारी तस्वीरें साफ़ दिख रही हैं। मैं, खुद भी! किसी सोल्जर की तरह मजबूत इरादा, अनुशासन और कड़ी मेहनत के उपहार मुझे पैरेण्ट्स से ही मिले थे। ईमानदारी, स्पष्टवादिता और संवेदनशीलता के गुणों का गठजोड़ मेरी जीवन संगिनी के साथ और मजबूत हुआ।

व्यवसाय के विकल्पों की कोई कमी न थी। लॉ ग्रेजुएट होने के कारण, अदालत के मैदान में हाथ आजमाने की इच्छा थी। पर पत्नी ने अचानक एक अटपटा सा सुझाव रख दिया–स्कूल शुरू करते हैं। मैंने पहले तो उनकी बात पर कान नहीं दिया। फिर आस–पास नज़रें घुमाईं तो पाया कि उस समय इधर स्कूल न होने के कारण कई पालक और उनसे भी अधिक, बच्चों को पढ़ने से बचने का ठोस बहाना मिल गया था। मुझे अब भी हँसी आ रही है कि मैंने उनकी एक न चलने दी। एक धुन सवार हो गई थी कि बच्चों को अनपढ़ नहीं रहने दूंगा।

उस समय तो लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई के बारे में कोई सोचना तक नहीं चाहता था, पर मैंने पत्नी के नेक ख्यालों के बीज बंजर जमीन पर बिखेर ही दिये। फिर किनारे बैठकर उनके उगने का इन्तज़ार बड़े सब्र के साथ करता रहा।

अपने लगाये बगीचे का हर फूल, बागवां को बड़ा प्यारा होता है। मेरी बगिया आज पूरे शबाब पर है। इसके दिलकश रंग और भीनी खुशबू–मुझे दूर जाने से रोक भी रही है। मैं चाहता हूँ कि इसकी अच्छी खुशबू दूर तक फैले और जहाँ तक भी बीज बिखरें वहाँ अपनी न्यारी छटा बिखेरें।

मुझे विरासत में मिली मेहनत और संकल्प की धरोहर, योग्य हाथों में सौंपकर जा रहा हूँ। मैंने अपनी अगली पीढ़ी को परम्पराएँ, संस्कार और जज़्बातों की भरपूर सौगातें दी हैं। मेरी हसरत है कि इन्हें इज्जत के साथ संजो कर रखा जाये।

सैम ग्रुप, मेरी आशा, विश्वास, तपस्या और साधना की बुनियाद पर खड़ा है। यह सफर लगातार जारी रहना चाहिये। मेरी आखिरी तमन्ना है कि यहाँ पढ़ने वालों का भविष्य उज्जवल हो, इसके सैकड़ों सहकर्मियों को कार्यशील वातावरण मिले और सब मिलकर उन्नति से भरपूर एक खुशनुमा समाज गढ़ सकें।

शायद यह मेरे दिमाग़ में लिखी जा रही आखिरी इबारत है। पता नहीं इसे कोई पढ़ सकेगा या नहीं।

विदाई की बेला में बुराइयाँ भूल जाने लायक और अच्छाइयाँ याद रखने योग्य होती हैं। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि मेरे प्लस–माइनस जीये ही बने रहें। पता नहीं कहाँ जाना है और यहाँ की यादें कितनी समेटकर ले जा सकूँगा। बस एक संतोष जरूर है कि जितना भी जी सका, उतने में अपने को सही रख पाया।

बस अब पानी में हलचल हो रही है, लगता है वो दरवाजे पर खड़े हैं।

आ रहा हूँ दोस्तों! चलो, कहाँ चलना है.........

(इकबाल सिंह सलूजा)

(आदरणीय स्व. श्री इकबाल सिंह सलूजा के अंतिम विचारों को, उनके व्यक्तित्व के अनुरूप कल्पना कर शब्द चित्रों में बाँधने का प्रयास किया, डॉ. मधुबाला श्रीवास्तव ने)

Message

"We cannot always build the future for our youth, but we can build our youth for the future."   Franklin D. Roosevelt

These words by Franklin D. Roosevelt perfectly describe our aim at SAM Group of institutions. Beyond providing a sound education, we wish to provide our students a holistic learning experience for life. Our aim is to teach students to LEARN, not just STUDY. Hence, we strive to travel beyond the boundaries of mere books. We have realized that the future is abstract and unknown but the youth in our hands are real and can be moulded.

Dear students, "You are the nation-builders. You are the movers of technology. You are the agents of change." It is our fervent hope that the years that you spend in SAM GROUP would enable you to equip with leadership and managerial skills. The knowledge that you will gain, the fine qualities that you will imbibe and the technical skills that you will learn to apply will be your major contribution to your parents, to society, and to the nation.

I am highly grateful and elated that all the institutions of group are playing a meaningful role in the competitive times ahead and scaling new heights, translating the dreams of the people into reality and bringing quality education in this area. All this has been possible with the dedicated and strenuous efforts of the able managing committee and hard work and experienced faculty and also with the whole-hearted co-operation of the parents.

I congratulate the editorial board and students of the college on their venture and wish them success for the seventh issue of SAM SPECTRUM

Our founder Chairman Late Shri I. S. Saluja deserves the due homage of immortals for he lives and reigns in the hearts of many through his service by education. He founded the SAM Educational Society in the year 1968 with a vision to offer quality based education to those who were deprived due to poverty, social status and many other such factors. He was committed to bring equality of opportunity despite a student coming from rural background. It is a matter of great pride for me that WE at SAM always remember and try to follow his prophesy:

"You don't have to be great to start, but you have to start to be great."

(Harpreet Singh Saluja)

Chairman, SAMCET, Bhopal

Message

We dedicate the success and glory of SAM Group to our Founder Chairman Late Shri I.S.Saluja. All the institutions of the Group have been developed according to his vision of imparting "Education with Excellence and Values".

The Group magazine exemplifies the voyage transverse and exhibits the literary skills of students and staff. I congratulate editorial team for their determined efforts in bringing out this seventh issue of "SAM SPECTRUM".

I take this opportunity to congratulate the staff of "SAM GROUP" who have been supportive for the various activities that were undertaken by the students in view of helping them to reach the Pinnacle of Perfection and Professionalism in whatever task they took on, thus strengthening our "Journey of achieving excellence".

During this Journey, I have learnt that:

"People will forget what you said"
"People will forget what you did", but
"People will never forget how you made them feel."

So, let us try to make every student and an individual who comes across us **"feel special"** and help them to become **"the best"** in the way they are **"special"**.

BEST WISHES AND GOD BLESS……………

Preeti Saluja
Executive Director
SAM Group

Message

College is a platform where the students prepare themselves to face the world and you at SAM have striven to mould the personalities of students in such a way that they can face the perplexing, complex situations and challenges of life with confidence. You provide a plethora of activities for the judicious all-round development of youthful energies, properly channelised towards creativity and self-actualization.

Annual College magazine is one such platform. It initiates the thought process of every SAM site and brings out hidden treasure of energy, enthusiasm and emotion from every individual. They themselves sometimes gets enthused watching their own craze, their conviction towards life and in the delite they achieve the unachievables.

Once again that moment has come, once again that chance, that platform has come and every SAM site – just go out, explore yourself, unshackle your chains of limitations and show the world—you have arrived.

God Bless every student, every faculty member who has dared to spread their wings. I know even the entire expanse of sky will prove less in front of their passion.

Aviraj Chawla

Group Director SAM Group of Institutions

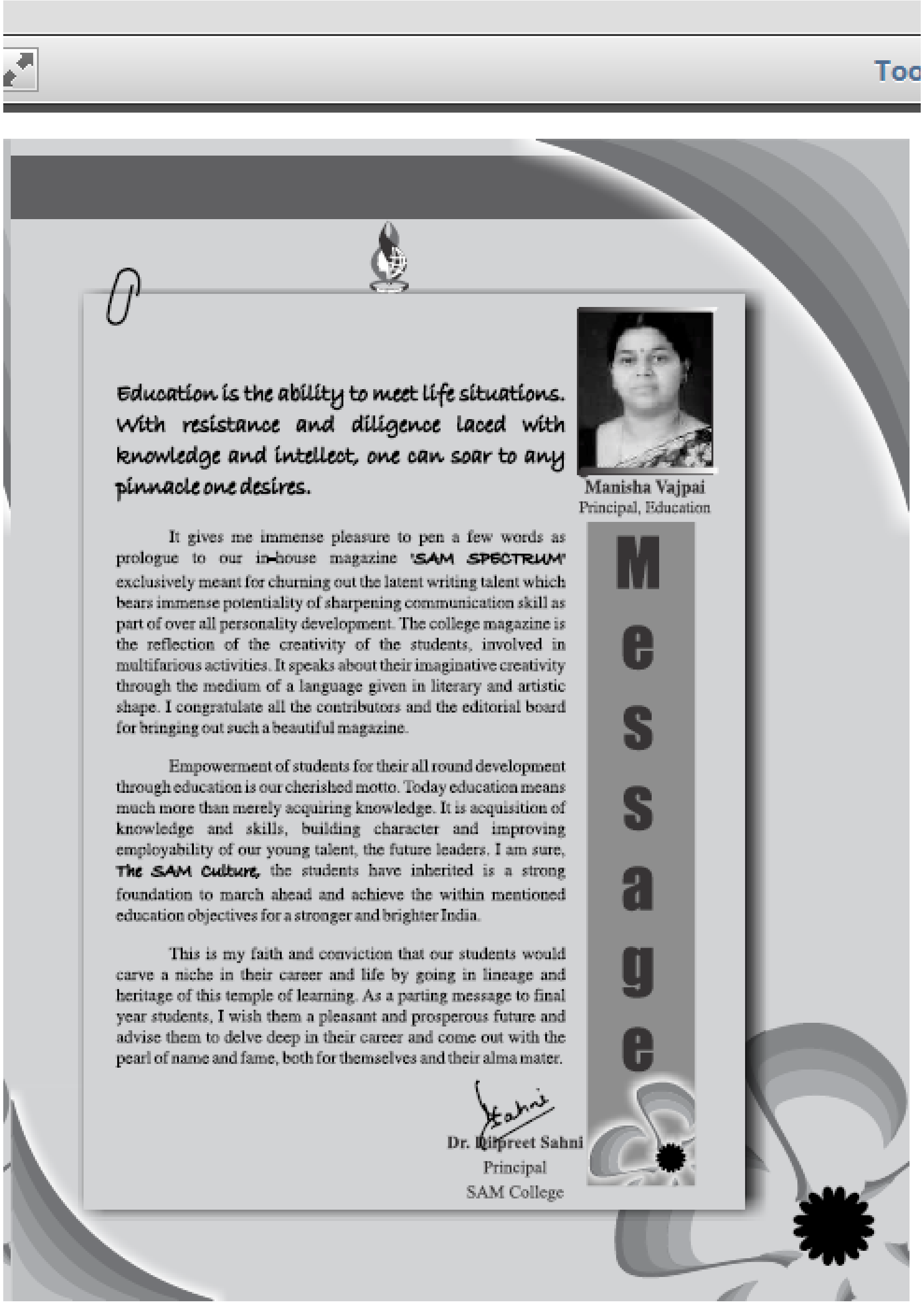

Education is the ability to meet life situations. With resistance and diligence laced with knowledge and intellect, one can soar to any pinnacle one desires.

Manisha Vajpai
Principal, Education

It gives me immense pleasure to pen a few words as prologue to our in-house magazine **'SAM SPECTRUM'** exclusively meant for churning out the latent writing talent which bears immense potentiality of sharpening communication skill as part of over all personality development. The college magazine is the reflection of the creativity of the students, involved in multifarious activities. It speaks about their imaginative creativity through the medium of a language given in literary and artistic shape. I congratulate all the contributors and the editorial board for bringing out such a beautiful magazine.

Empowerment of students for their all round development through education is our cherished motto. Today education means much more than merely acquiring knowledge. It is acquisition of knowledge and skills, building character and improving employability of our young talent, the future leaders. I am sure, **The SAM Culture,** the students have inherited is a strong foundation to march ahead and achieve the within mentioned education objectives for a stronger and brighter India.

This is my faith and conviction that our students would carve a niche in their career and life by going in lineage and heritage of this temple of learning. As a parting message to final year students, I wish them a pleasant and prosperous future and advise them to delve deep in their career and come out with the pearl of name and fame, both for themselves and their alma mater.

Sahni

Dr. Dilpreet Sahni
Principal
SAM College

सम्पादक की कलम से...

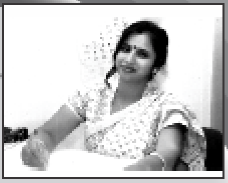

स्पैक्ट्रम–2014 आपके हाथों सौंपते हुए रोमांचित हूं। सैम कॉलेज की ओर से लगातार इन्द्रधनुषी रंगों का कारवां, जारी रख सकने की प्रसन्नता में आप सब भागीदार हैं।

महिलाओं के विरूद्ध होने वाली घटनाओं की रोकथाम नहीं हो पाना, नारी उत्थान के प्रति संकुचित सामाजिक दृष्टिकोण तथा कुचेष्टाओं से भरी प्रवृत्तियों को उजागर कर रहा है। इसलिये न चाहते हुए भी, स्पैक्ट्रम–2014 का रूख इसी कसक की ओर हो पाने से रोका नहीं जा सका। संजीदा शब्दों में डूबी हुई नारी उत्पीड़न की कोई खबर जब भी कहीं पढ़ने को मिलती है तो लगता है कि मैं वर्ष 2014 में हूं या वर्ष 1420 के समाज का अंग हूं। आखिर लोगों को लड़कियों से तकलीफ क्या है ? अपनी बराबरी करती लड़कियों में नुक्स निकालने से पहले वे स्वयं पर निगाह क्यों नहीं डालते। बुर्का, दुपट्टा और कपड़ा भी जिन्हें आब्जेक्शनेबल लगता है। आखिर महिलाओं की स्वतंत्रता और विचारों पर नियंत्रण का अधिकार उन्हें दिया किसने ?

महिला–पुरूषों या कहें युवा पीढ़ी के बीच में यह लैंगिक विषमता से उपजा विद्रोह दरअसल युवकों की बेरोजगारी, भटकाव और आगे बढ़ने के लिये शार्ट कट्स की असफलताओं के कारण अधिक होता है। पर इसका दोष उन्हें कड़ी प्रतियोगिता देने वाली लड़कियों का तो नहीं है। मोबाइल, इन्टरनेट, टीवी वगैरह के माया जाल में उलझने वाली युवा पीढ़ी में से जो भी गर्त में जा रहे हैं, वो अपनी असफलताओं के लिये खुद जिम्मेदार हैं। यहाँ मैं उन लड़कियों को भी सचेत कर रही हूँ जो स्वयं इस इलैक्ट्रानिक मदहोशी की शिकार हो रही हैं।

कई बार लड़कियों के साथ होने वाले शोषण के लिये उनके रहन–सहन और तौर–तरीकों को आपत्तिजनक माना जाता है, जो एक बहस का विषय हो सकता है। लेकिन यह तो मानना ही पड़ेगा कि युवाओं के लिये, भले ही युवतियां ही क्यों न हों : स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के बीच फर्क समझना जरूरी है। मर्यादा का अर्थ दोनों के लिये बराबर है। लड़कियों को अपना महत्व समझना होगा है। उनकी समाज में उपयोगिता कई बार लड़कों से भी अधिक होती है।

लड़कियों की शिक्षा, रोजगार और विकास के समान अवसर, समय की मांग है। इसके लिये सुरक्षा और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराना समाज की जिम्मेदारी है। बार–बार महिलाओं से जुड़े सवाल इसलिये खड़े होते हैं कि लोग जब अपने घर में होते हैं तो उनकी विचार धारा भी चहारदीवारी से घिरी होती है और जब बाहर होते हैं तो वे बिना रोक–टोक चलने वाली हवाओं में बहने लग जाते हैं। एक ही औरत रिश्तों के कितने मकड़ जाल में उलझी होती है, इसे गहराई से समझने की जरूरत हर किसी को है। यहाँ महिलाओं की स्थिति मकड़ी की तुलना में अलग होती है। जाल के सिरों पर, कई एक अपेक्षाओं को निभाना महिलाओं पर अधिरोपित फर्ज है। लेकिन इनमें से कई अपेक्षाएं शिकारी बनकर उसे निशाना बनाने को तत्पर होती हैं। मैं अपनी छात्राओं से यही कहना चाहूंगी कि आगे बढ़ती रहें पर कदम सम्हाल कर... राह में आने वाले खतरों से चौकस और चौरस्तों पर सतर्क।

सैम ग्रुप के कई कार्यक्रमों में हमने महिला हितों के विषय उठाये। इनकी झलक आपको आगे पढ़ने को मिलेगी।

सैम ग्रुप के शिल्पी आदरणीय श्री इकबाल सिंह सलूजा जी के महा प्रयाण पर आधारित कुछ पृष्ठ, पाठकों के लिये प्रेरणादायी होंगे। उनके अंतिम उद्गारों को भी उकेरने का प्रयास हमने किया है जो उनके प्रति अगाध श्रृद्धा को समर्पित किया गया है।

स्पैक्ट्रा 2014 में समावेशित लेख जिस तरह से रूच–रूच कर लिखे गये हैं, उतनी ही रूचि से पढ़े जायेंगे तो प्रतिक्रिया जरूर मिलेगी। आपकी प्रतिक्रियाएँ हमारे लिये अनमोल हैं जो अगले अंकों को और निखारने के लिये बेहद जरूरी भी हैं।

पत्रिका प्रकाशन के इस विशिष्ट कार्य को अंजाम तक पहुँचाने के लिये वैसे तो समस्त सैम परिजन धन्यवाद के पात्र हैं लेकिन अपनी मार्गदर्शक, स्नेहमयी निदेशक सैम ग्रुप श्रीमती प्रीति सलूजा के प्रति आभार के सभी शब्द कम हैं। इसीके साथ अपनी परम सहयोगी डॉ. मधुबाला श्रीवास्तव और सम्पादक मंडल के सहयोग को अगले अंक तक भुला पाना मेरे लिये संभव नहीं होगा।

(श्रीमती ज्योति पाल)

सम्पादक

Mrs. Jyoti Pal
H.O.D., B.Ed. Dept.

ANNUAL REPORT-2013-2014
EDUCATION DEPARTMENT

An education isn't how much you have committed to memory, or even how much you know. It's being able to differentiate between what you know and what you don't.

-Anatole France

Since 2005 this department has been imparting training courses to the pre-service teachers.

In every session about 100 trainees take admission in one year B.Ed. Course. During the period of teaching,due emphasis is laid on the development of teaching aptitude,strategies,skills,techniques and tactics among the trainees and enlightening them with the knowledge from the field of technology and statistics.

Through the extension activities of the department, the trainees are exposed to the importance of school-community relationship, environmental protection, social awakening and the education for the down trodden, unprivileged and the secluded section of the society.

The department gives special attention to the development of Micro-teaching skills through Peer Group observation ,Technology medited teaching ,internship criticism classes and guest lecture on specific topic e.t.c.

The B.Ed. curriculum established in SAM College, Bhopal in session 2005-06. The D.Ed. primary teacher training program is being co-ordinated from 2010-11.

For qualitative development of education a sound program of vocational education for teachers is necessary(Kothari Commission).

From the above perspective we conclude that the SAM College, Bhopal is thoroughly in practice to make best teacher. The orientation program for B.Ed 2012-13 was organized on 18th March 2012.

Both B.Ed & D.Ed. curriculum is based on training program. Therefore from the starting each student is to make Lesson Plan according to the given skill, teach that Lesson Plan and have feed back to complete the cycle of micro-teaching.

This cycle is incomplete until the student gets perfection in a particular skill. For the completion of this cycle, the student must go on practice. After micro-teaching was over, a lecture was arranged by the subject expert.

The students were made aware of necessity and importance of technology in education. Educational Psychology provides solution of educational problems to the teacher and so for the physical, mental & social development of B.Ed. & D.Ed. students.

The Psychology practical work was conducted in psycho lab. It is well known that a teacher is trusted with allround development of students. So, B.Ed. & D.Ed. students should be made efficient in all the fields. In this content, various curricular & non-curricular activities were organized during the whole session.

- Hindi Divas celebration.
- Rangoli Competition.
- Green Day Celebration.
- Environment Day - Tree Plantation.
- Kavya Path Pratiyogita.
- Mendi Competition.
- Tie & Die workshop
- Block Printing Workshop

Above all ,the various Cultural,Literacy and Sports Activities and workshops were also organized.

To assess the quality of teacher's training, Best Teacher competition was judged by faculty of other institution.

A lecture series was organized by the B.Ed. Dept. on current and important topics for a week.SAM College Of Education organized a PRE-UNIVERSITY TEST /EXAM for B.Ed. trainees of the college and a feedback session. On the basis of the results obtained by them the feedback session was organized on 2nd Dec 2013. The students were informed the errors commited by them and were advised ideal writing skills for main examinations. The final practical was conducted on 3rd & 4th FEB .

SAM COLLEGE OF EDUCATION,BHOPAL is making tremendous efforts in B.Ed. & D.Ed EDUCATION.

***

National Conference
on
The Contribution of Women and Educational Institutions in Building of Nation

(Sponsored By U. G. C)

28th-29th March 2014

Brief Report

It gives me immense pleasure to present a brief report of the two days National seminar at this campus under the kind sponsorship of University Grants Commission. The seminar was inaugurated by a team consisting of Dr. Shashi Rai, a renowned educationist of Madhya Pradesh, Dr. Akhilesh Pandey, Chairman M. P. Private University Regulatory Commission, Dr. U. C. Jain, Additional Commissioner Higher Education, M. P. and Shri Arvind Dixit, Additional DPI School Education. Dr. Shashi Rai while appreciating efforts of the SAM Group in propagating quality education especially for girls in Madhya Pradesh for the last 46 years highlighted the role of women in Nation Building but with a caution to girls never to forget their identity as a female to inculcate family & National values like love, passion, sacrifice, helping hand to everybody and love for Nation. Dr. Pandey and Dr. Jain congratulated the SAM Management for developing such a beautiful campus with serene environment and appreciated the efforts for importing education in different fields of Humanities, Science, Technology, Management and Nursing where about 7000 boys and girls from different parts of the country are pursuing their studies. Dr. Pandey and Dr. Dixit also suggested for converting the SAM Group of 11 Institutions into a leading university of Central India. All the dignitaries congratulated SAM authorities for organizing the National seminar on issues which are need of the hour.

About 100 invitations were sent to different universities and colleges of the country to depute delegates for deliberations in the seminar and I feel pleasure to inform that we received abstracts of papers from 80 delegates. It was a herculean task to include all the papers in two days seminar but the jury invited a few selected ones for presentation. Most of the delegates agreed with one voice about the efforts being done by women and educational institutions for building of nation. Some of the deliberations are worth mentioning. The conversation between the angel and the lord while developing a woman as presented by Dr. Dilpreet Sawhney was applauded by one and all. Beauty of the women is that she continues working at home, in office, in fields, in labs and even in the battle fields but forgetting its worth. Papers on role of women in their contribution on economic front of the Nation besides many other general papers were also presented which invited lot of lively discussion. The National Seminar though of a short duration but was graced by leading chairperson like Dr. Indu Prabha, Principal BHEL College, Dr. Reeta Sharma, Dean RIE Bhopal, Dr. Sudha Singh, Principal Hamidiya College and the leading educationists like Prof. J. S.Grewal and Prof. P. K. Mishra whose presence enhanced the level of this seminar and their kind deliberations and suggestions in the seminar opened new avenues for the faculty and their delegates for future endeavors.

Prof. Grewal shared his experiences of working in Uganda while developing curriculum and other field experiences in different areas like Non-formula education, adult education for enhancing literacy rate in India. Prof. P. K. Mishra, Director, CRIM, B. U. Bhopal Suggested the Organizers of the National Seminar to take up research studies on the topics discussed by delegates in their papers.

Paper by a budding researcher Miss. Kopal Saluja on 'Impact of Globalization on Educational' Institution and the key note address by Dr. Kala Mohan on impact of globalization on society and skills oriented education for 21st century workforce are also worth mentioning.

IMPLICATION

- It is a matter of concern that out of 80 contributions, only 2 are form the male delegates. While appreciating the role of women do we not need the help of our male counterparts? All of us will have to think very seriously on this issue as none of the two is complete without the other.
- Presentations become more authentic if supported by statistical analysis. It is hoped that researchers will take care of this aspect in future deliberations.
- How many of us think about our Nation? We have become expert in criticizing others without doing anything for the country. Let each one of us take pledge to do at least one good task to enhance the image of our family, neighbors, society and ultimately the Nation.

ACKNOWLEDGMENT

We are highly thankful to all the dignitaries who guided us during deliberations and the delegates for attending the seminar and making it lively by their wisdom and thoughtful efforts. We are thankful to the management. Shri. Harpreet saluja Ji, Mrs Preeti Saluja & Shri Aviraj Chawla of SAM Group for providing us this opportunity for meeting, discussing and giving some new insight on issues in the seminar. We are highly grateful to U. G. C. (M. P. chapter) for sponsoring this National seminar. This seminar would not have been a success without the active deliberations presented by young faculty members and the budding researchers. We are thankful to all of them for providing an opportunity for active deliberations in this Seminar.

We are thankful to Dr. R.K. Ghai, Campus Director, Dr. Dilpreet Sahni, Principal SAM College, Dr. Manisha Bajpai, Principal SAM Education College, Mrs. Jyoti Pal HOD B.Ed. Department and all the staff members for their concerted efforts to organize the seminar meticulously.

***

Dr. V. P. Gupta

(Dean, SAM Group)

Manisha Vajpai
Principal, Education

How to Be an Optimist

Once I delivered a lecture on moral values with continuous stress on being an optimist and a better human being. After I finished, many of my friends approached me with a common question(which once bothered me earlier)-HOW TO BE AN OPTIMIST? One of them even said that every time she thinks about a thing in a positive manner the result obtained is negative! This is the most common obstacle faced by all of us in treading the path of optimism. There are certain things which deviate us from the path of optimism and this is where we have to start working from.

The first is to bring flexibility in our views and attitudes to life for eg. One of your friend becomes harsh with you over something. You react by thinking "I hate her, really hate her" and you go on from there to think of all the things you don't like about your friend. Your friends act of being harsh with you was temporary probably the out come of some mental tension....., but you turned it into something permanent by thinking "she's always like that" rather than thinking that she might be in a bad mood today or......

The second is to remove pervasiveness i.e. thinking that if one thing goes wrong everything is bad. it is just like thinking that you are not good in any subject because you have a hard time with Maths.

Next is to remove the attitude of personalization i.e. blaming yourself for everything bad that happens. Of course we can't lose sight of reality and out of extreme optimism, blame everything bad that happens on others but the negative aspect of pessimism should not let us beat ourselves needlessly.

To eliminate all these characteristics of pessimism the best remedy is disputing one's own negative beliefs. Whenever pessimistic thoughts haunt your mind try to negate it positive thinking. For eg., If you call and leave a message for your friend and she doesn't return to your call, you start thinking that she is ignoring you, you should dispute your negative feeling by thinking that she has always been nice to you....or may be she isn't feeling well or simply by thinking to yourself. Even if she was ignoring me what about it? Who decided I had to be perfect with everything and everyone has to like me, no matter what others may think I'm doing my best.....I have to be good."

Our attitude can not change in a day. It will take time. The only things to be kept in mind is to persist in following its rules till the day comes when you have a feeling coming straight from your heart not your mind 'coz the mind can change hell into heaven and heaven into hell. The quality of life ultimately depends on our state of mind.

So discard phrases like "It's impossible. I won't be able to do it or what difference will it make now? Whatever circumstances we may find ourselves in now- let us learn to say to ourselves "I am sure to win in the end....I have the best family.....and I am the happiest person on earth. And it is the faith which will make things right for you in life. It won't take years for you to gain and follow the art of optimism but the only thing to remember is having faith that it will happen sooner or later.

Remember for ever-OPTIMISM IS HOPE. It is not the absence of suffering, nor is it always being happy and satisfied, but it is the conviction that-one may fail or suffer painful experience but he will overcome them and be happy again.

Once you have acquired the skill of being an optimist you never lose. It is like learning how to swim or ride a bicycle, which once learned is not forgotten easily. Believe me, with the mantra life will be transformed from mere living to a mission. So be an optimist and live life to the fullest.

***

HOD
Education Dept

Role of Discipline in Student's life

Everyone knows that there are different stages in our life. Among them student life is one of the most important stage in our life. This period of life is as important as a pilot in a plane. There are different factors to be followed to get success in student life. . Discipline is one of the most essential factors to be brought in practice to be a success.

Discipline means a way of being honest, hardworking, strict followers of rules and regulations, social norms and values. In case of breaking them, one must be punished. Since the beginning of the civilization, discipline is a serious matter for individual and society. People have been making social and religious norms, rules and restrictions to make people disciplined.

Class Attendance

Attending and actively participating in classes are keys to college success. This requires the discipline to get up in the morning, to make education a priority and to give maximum effort during the classroom experience. Disciplined students come to class prepared and ready to participate in class and small group discussions. They also take notes and ask questions. In a traditional face-to-face classroom, attendance and engagement are necessary to learn course content and to succeed in homework, tests and projects.

Studying

Some students attend classes, but lack the discipline to read their textbooks and study. Studies show that successful students schedule study time to ensure they consistently prepare for classes and complete assignments. Typically, colleges advise students to plan to spend two to three hours of time outside class on reading, homework and other class commitments. Discipline in these areas usually leads to more complete homework and projects, better test preparation and a better overall learning experience in combination with classroom engagement.

Utilizing Resources

Disciplined students also make use of available resources as necessary. The library, instructors and office support staff on campus are some of the resources students can access. Meeting with instructors periodically or with questions and concerns is a great way to stay on top of grades and areas for improvement and helps students and their instructors to build a general rapport. Having discipline helps students seek help when needed and make the time to use it.

Avoiding Temptations

Proactive strategies with discipline are a major part of the battle for life balance and academic success. Students also need self-discipline to avoid some of the allures of college that inhibit academic success. Let us all aim to be a little more self disciplined from henceforth.

Thus discipline makes students good and perfect to behave or deal with the things. It is an ornament of the students. People like disciplined students. Discipline leads the people towards a perfect way of living. Students must adopt the disciplinary aspect of every performance that makes them successful all the time. Students who are not disciplined, they should be taught and discouraged to be indiscipline. So, discipline plays a great role in the life of students.

***

Classroom Etiquette and Student Behavior

Meena Tiwari
HOD
D.Ed

All colleges, no matter where they are located and no matter how big or how reputable they are, shares some similar "rules of the road." These rules are really more about interpersonal interactions in college than they are about college itself. Nevertheless, the failure to abide by these simple rules gets students into heaps of trouble with their peers every year. The classroom should be a learning centered environment in which faculty and students are unhindered by disruptive behavior. Students are expected to maintain proper decorum in the classroom.

The following rules should be followed

1. **Respect And Follow Your College's Honor Code**

   This is at the top of the list, because it is the most important rule of all. Don't cheat ever even if you don't get caught, nothing will kill your reputation with your classmates faster than hearing, anecdotally or otherwise, that you were willing to cut corners to bail yourself out.

2. **Go To Class And Get There On Time**

   It is disrespectful to your professor and distracting to your classmates to walk in to a lecture or seminar late. Sure everyone is going to screw up every now and then, but don't make it a habit. It is rude, and if you do it too often, your professor will notice and may dock your grade for it.

   Similarly, you should do everything you can to avoid missing class. If you don't think the professor has something valuable to teach you about a subject and can do so skillfully, don't take the class.

3. **Be prepared for class and be an active participant**

   A large part of the learning experience in college is what students teach each other, both inside and outside of class. If you have a question about a subject in lecture, raise your hand, wait to be called on, and ask it. Chances are, others are confused on the same point and will be grateful to you for stopping the train.

   If it is a seminar or small-group class and your professor routinely solicits your active participation then participate! Don't be afraid that you'll say something stupid. The only way to learn and gain confidence in learning is to stretch yourself and get out of your comfort zone. Don't assume that the people who are talking actually know more than you do. In all likelihood, they are just more confident.

4. **Dress appropriately**

   Your clothes should suit the occasion. Dressing up for class used to be de rigueur because the learning process was thought to have a solemn, almost sacred quality. Dressing sharp shows your respect for the power of education. It also shows respect for your professor, who will be more likely to reciprocate.

5. **Turn off the Smartphone and put it away.**

   By texting, tweeting, and engaging in all other forms of Smartphone fondling, you're basically telling the professor that what you have gotten is more important than what he has to say.

   And don't think you're fooling the professor whenever you hold your phone in your lap and under the desk. Staring at your crotch and smiling isn't normal behavior.

   If you need to have your phone on for an emergency (parent's call), let the professor know in advance and set your phone to vibrate. Leave the classroom before taking the call.

6. **No chatting and snickering during class.**

   College isn't high school study hall. Don't chat or snicker during class. It's disrespectful to the professor and to your classmates who are actually trying to pay attention.

7. **Don't work on other class work during class.**

   If you're in Calculus, don't work on Chemistry. If you need to get other class work done, just skip class to work on it.

8. **Respect your professor's time.**

   Professors will often linger after class a

Li-Fi A New Technology in Wireless Communication

Mrs. Neha Dubey
ICT Center Incharge

Li-Fi is a new way for communication as wireless Communication because, it use light (LED bulb) and lighting reaches nearly everywhere, so communications can ride along for nearly free. As WI-FI hotspot and cloud computing are rapidly increasing reliable signal is bound to suffer. Speed and security are also major concerns. They are vulnerable to hackers as it penetrates through walls easily.

LI-FI is said to overcome this. This new technology is comparable to infrared remote controls which send data through an LED light bulb that varies in intensity faster than the human eye can see. In near future we can see data for laptops, smart phones and tablets transmitted through the light in a room. It was observed that the data can be transmitted through LED light. If there will be an LED, there will be data.

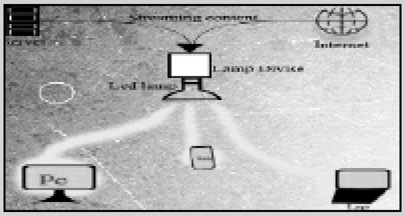

Fig 1:Architcture of Li-Fi

Li-Fi (Light Fidelity) is a fast and cheap optical version of Wi-Fi, the technology of which is based on Visible Light Communication (VLC).VLC is a data communication medium, which uses visible light between 400 THz (780 nm) and 800 THz (375 nm) as optical carrier for data transmission and illumination. It uses fast pulses of light to transmit information wirelessly. The main component of this communication system is a high brightness white LED, Which acts as a communication source and a silicon photodiode which shows good response to visible wavelength region serving as the receiving element? LED can be switched on and off to generate digital strings of 1s and 0s. Data can be encoded in the light to generate a new data stream by varying the flickering rate of the LED. To be clearer, by modulating the LED light with the data signal, the LED illumination can be used as a communication source. As the flickering rate is so fast, the LED output appears constant to the human eye. A data rate of greater than 100 Mbps is possible by using high speed LEDs with appropriate multiplexing techniques. VLC data rate can be increased by parallel data transmission using LED arrays where each LED transmits a different data stream. There are reasons to prefer LED as the light source in VLC while a lot of other illumination devices like fluorescent lamp, incandescent bulb etc. are available [5].

LI-FI technology uses semiconductor device LED light bulb that rapidly develops binary signals which can be manipulated to send data by tiny changes in amplitude. Using this innovative technology 10000 to 20000 bits per second of data can be transmitted simultaneously in parallel using a unique signal processing technology and special modulation.

Whether you're using wireless internet in a coffee shop, stealing it from the guy next door, or competing for bandwidth at a conference, you have probably gotten frustrated at the slow speeds you face when more than one device is tapped into the network.

In future, data for laptops, smart phones & tablets can be transmitted through light in room by using Li-Fi.

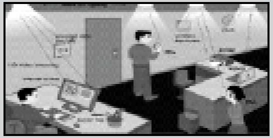

Fig 2: Li-Fi enviorment

Researchers are developing micron sized LED which are able to flicker on & off around 1000 times quicker than larger LED. They offers faster data transfers and take up less space so we could save space or add more LED's to further boost the channel of communication. Also 1000 micron sized LED can fit into area required by 1sq. mm large single LED. A 1 sq.mm sized array of micron sized LED's could therefore communicate 1000×1000 (i.e. a million) times as much information as a single 1mm LED. We can be sure that the future for Li-Fi is bright. Li-Fi consortium believes it is possible to achieve more than 10Gbps, theoretically allowing a high definition film to be downloaded in 30 seconds.

***

Assistant Prof
Education Dept

SELF CONFIDENCE
A key to success

The word Confidence is an undisclosed key. This is among several factors that are responsible for one's success. Confidence is the necessity of victory in life. Never aim beyond your limits, know your strengths and then decide your goals. Never pressurize yourself to achieve something which is beyond your strengths. According to a famous quote "Common sense is not common in common people" With little a bit of common sense and a lot of confidence you can achieve great success in life.

Confidence which plays a vital role in one's success is of two types; Self Confidence and Over Confidence. Confidence depends on character, guts, self worker but not on others. Believe in yourself and others will definitely follow you. Have a look at the following Confidence Instruction that might help you:

- One should be a self worker.
- Candidate must gain good knowledge in different fields.
- Person should be brave, optimistic and positive thinker.
- Must stay updated with the things in and around him.
- Nothing is possible without success, so be confident and achieve your goals with utmost ease.

Self Confidence: People say "With realization of one's own potential and self-confidence in one's ability, one can build a better world". So, be confident and face the problems with extreme confidence. This helps you to achieve success more quickly. A self-confident person has high self-esteem, self-respect, and belief in her- or himself. By developing your self-confidence, you will be able to achieve your goals; take opportunities that come your way and also have the strength to overcome any obstacles.

Over Confidence: Be confident but not over confident. I can do it is confidence where as I can only do it is over confidence. Agreeing oneself and ignoring others is called Over Confidence. Over Confidence is fake, since it's blank.

Tips to boost self-confidence:

1. Socialise with self-confident people and spend time in good environments. The people around you affect your confidence levels, so seek the company of people who are positive and are honest with you. Try to avoid negative people, as they can pull you down and deplete your energy. Choose your environments carefully and don't compromise for others.
2. Be true to yourself by taking action when you want something. Follow through on it even if you think you might fail. Be gentle with yourself and don't put yourself down if you make a mistake - you are only human and we all make mistakes sometimes. The good thing is that you learn from them so that you know what not to do until you achieve your goal. If you keep trying, you will eventually succeed.
3. If you are afraid of something, do it anyway. Often fear disappears when we face the things we are scared of, as we experience it how it is rather than how we have imagined. You will find the reality is that talking to that person was actually quite fun or attending that interview wasn't as uncomfortable as you thought.
4. Make sure that you keep a note of your achievements in life. Sometimes we feel like we don't make any progress because 'we can't see the wood for the trees.' Take time out to write down how far you have come over the years. Write down any fears you faced and obstacles you overcame. This will help keep you motivated and give you the confidence you need.
5. When you go to bed at night think of any achievements you had during the day - no matter how small - and give yourself credit for them. This will make you feel good as you sleep, and when you wake in the morning, you can visualise yourself being happy and confident for the day. So you set yourself up for success!

***

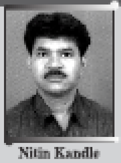

Nitin Kandle

Build a Better World

God said, "Let us build a better world"
And I said, "How?"
"The world is such a cold, dark place
and so complicated now
and I am so afraid and helpless
there is nothing I can do"
But God in all his wisdom said
"Just build a better of you"

Yes, we are living in a world full of complexities and selfishness. Its a fact, that we can't change the world the way we want, as we are not here to see through one another, but to see one another. We should have faith in ourselves, that, when we will give the world the best we have, the best will come back to us.

Its the need of the hour, to concentrate truthfully and honestly on our own actions or deeds, than to poke our nose in the filthy business of others. And its a fact that the action signified by one's effort is the real key to ones success as well as happiness. There is no success and resultant happiness without action. I agree that, action or effort may not sometimes produce the desired result, but, happiness and success can never come without action or effort. That is why it is said in Gita, " Do your duty unmindful of the results!" In this fishy web of social system, we should look at the sunny side of everything and be an optimist. And should pace every step with firmness towards our ultimate goal in life. Determination with hard work and consistent efforts overturn all the dream stones to the abode of reality.

In this competitive world of today, we have to strive day and night for our existence and finally have to flag all the milestones of success. And this success does not depend upon one quality or characteristic but often on the combination of many. Talent is not restricted to our professional competence and expertise. It includes ideas, adaptability, influencing ability, organizing capacity and other related dynamic and leadership qualities. We should be honest and should render good service for fair payment, irrespective of what others are doing. Good service with a smile is must for success and all other achievements. As the work done with self satisfaction and complete dedication definitely blooms the heart with self contentment and divine bliss.

Believe me, if I, you, he and she will have the faith in ourselves and take the right path, then sooner or later there will be 'we' to represent our dictum to the world, let us join hands and sing with devotion:

I am but one,
But I am one,
I can not do everything
But I can do something
What I can do and
What I ought to do
With Gods's help,
I will do.

***

मानव संबंधों में मूल्यों का महत्व

आरती शर्मा
Assistant Prof.
B.Ed

आज हम देखते हैं कि हमारा समाज अनेक सामाजिक बीमारियों से ग्रस्त है, उसका मुख्य कारण प्रेम त्याग, सहयोग, आदर जैसे सामाजिक मूल्यों का अभाव है, जब तक हम इसके महत्व को नही समझेंगे और हम अपने आदर्शों से दूर होते जायेंगे तब तक उस मुकाम को हासिल नहीं कर सकते जो हमारा लक्ष्य है।

हम बात कर रहे हैं मूल्यों की तो जीवन स्वयं एक मूल्य है इस बात को हरबर्ट स्पैंसर जैसे दार्शनिक स्वयं सिद्व कर चुके हैं परन्तु केवल जीवन ही एक मात्र मूल्य नही हो सकता है जीवन तो पशुओं, पौधों में भी है, परन्तु मनुष्य अपने जीवन द्वारा उच्च आदर्शों को प्राप्त करता है ।

बाईबिल में लिखा है – **Man does not live by bread alone** जीवन के मूल्य के साथ कुछ उच्च मूल्य भी है जिनकी सिद्वि जीवन का साहस है, जीवन उन उच्च मूल्यों का आधार है । यदि जीवन नहीं तो वे भी असम्भव है ।

मनुष्य ही मूल्यों में चुनाव करता है, वह एक मूल्य को ऊँचा और दूसरे मूल्य को नीचा एक को बढ़िया और दूसरे घटिया मानता है । यदि वह ऐसा न करे तो वह चुनाव नही कर सकेगा । जो कि वह जीवन की प्रत्येक स्थिति में उसके आधार पर निश्चय करता है और कार्य करता है । जैसे एक लोक कथन है – **If Wealth is Lost Nothing is Lost, If Health is Lost, Something is lost, If Character is Lost Every thing is Lost,** इसमें धन स्वास्थ्य तथा चरित्र के मूल्यों की तुलना की गई है और कहा गया है कि धन से श्रेष्ठ स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से श्रेष्ठ चरित्र है । यहां पर मूल्यों की उच्चता का भाव आधार बनता है । दूसरी ओर यदि धन न हो तो स्वास्थ्य नही रहता यदि स्वास्थ्य न हो तो चरित्र कैसे रहेगा । इस प्रकार चरित्र के लिए जीवन और जीवन के लिए धन की आवश्यकता है ।

समाज या संस्कृति मनुष्य को मूल्यों के आधारभूत प्रतिमान प्रदान करती है, समस्त मानवीय इच्छाएं सामाजिक आवेगों के साथ घुली–मिली रहती है । मानवीय मूल्य मनुष्य के सामाजिक संबंधों के द्योतक या प्रतीक (ँलडइवसपव) है यह संस्कृति, परम्परा व प्रशिक्षण ही है जो कि आधारभूत मूल्य व्यवस्थाओं (टेंसनम लेबमड) का सृजन करते हैं ।

मूल्यों से गुणात्मक सुधार सामाजिक पर्यावरण में मनुष्य के समूह तथा संस्थागत संबंधों व अनुभव की सामाजिक परिस्थिति में ही घटित होता है ।

शिक्षण कला स्वयं मूल्य कार्य है विद्यार्थियों की तरफ से हम देखें तो शिक्षक कुछ घटनाओं व्यक्तियों व व्यवहारो को अधिक महत्वपुर्ण मानते है जिन पुस्तकों को वह स्वंय पढ़ता है या जिन्हें पढ़ने के लिए व छात्रों को निर्देश देता है जिस तरह का कक्षा नियंत्रण व अनुशासन वह स्थापित करता है जिन प्रकरणों पर वह अधिक चर्चा करना पसंद करता है । जिन नाटकों, चित्रों, चलचित्रों, वक्ताओं को वह पसंद करता है जो गृह कार्य वह देता है जिस तरह से वह छात्रों की तैयारी कराता है । शिक्षक के सभी क्रियाकलापों में उसके मूल्यों की झलक मिलती है । वास्तव में पूरा विद्यालय ही मूल्यों से ओतप्रोत होता है ।

मूल्यों की शिक्षा उस रूप में नही दी जा सकती जिस रूप में अनेक विद्यालयों में अर्थशास्त्र व राजनीतिशास्त्र को अच्छे व्याख्यान देकर महत्वपूर्ण नोट्स लिखवाकर व लिखित प्रश्न–पत्र द्वारा अन्त में परीक्षा लेकर पढ़ाया जाता है ।

बल्कि मूल्यों की शिक्षा विभिन्न विद्यालयी कार्यकलापों द्वारा दी जाती है । क्रीड़ा स्थल के क्रियाकलाप, खेलों को खेलते समय खिलाड़ी के रूप में महान नेताओं व पुरूषों के चरित्र, अभिभावकों व शिक्षकों के बीच अन्तक्रियाओं शिक्षकों की कार्यदशाओं व उन्हें मिलने वाली स्वतंत्रता विद्यालयों को संसाधन समुदाय के योगदान के माध्यम से ।

आज के युग में विद्यालयों के मूल्य शिक्षा को वह महत्व नही दिया जा रहा है जो वैदिक युग में था। जब विद्यार्थी शिक्षकों की बातों व व्यवहार में कथनी करनी में अन्तर देख लेता है तब मूल्यों की शिक्षा निष्प्रभावी हो जाती है ।

अनेक बार बच्चे मूल्य विरोधी कार्य करते हैं ऐसे अवसरों पर माता–पिता को शारीरिक दण्ड विशेषाधिकार वंचन, सामाजिक अस्वीकरण को अनदेखा न करके बल्कि उन्हें विचार विमर्श के द्वारा अच्छे आचरण की शिक्षा देनी चाहिए ।

अरस्तु ने कहा था **"State has a moral end"** एक सामाजिक व्यवस्था एवं एक श्रेष्ठ राजनैतिक संविधान उत्तम मूल्य है । व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में मूल्यों का सबसे बड़ा योगदान होता है ।

व्यक्ति, समाज और मूल्य में पाए जाने वाले पारस्परिक संबंध व प्रभाव को दर्शाने के लिए इस हम इस प्रकार समझ सकते है । जैसे एक दीपक की बाती (जैम एबा) तेल (जैम वपस) और ज्योति (मूल्यों) के बिना बत्ती (व्यक्ति) और तेल (समाज) दोनो ही अर्थहीन है । अर्थात अन्तिम रूप में मूल्य ही समाज और व्यक्ति के जीवन में ज्योती जलाता है ।

यदि समाज अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहता है तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्तित्व के परम [illegible] मूल्यों की नियमित रूप से पूर्ति करता रहे । व्यक्तित्व की सर्वोत्तम खोज सुन्दरता, अच्छाई तथा प्रेम उच्चतम अध्यात्मिक मूल्य है इसी सुंदरता अच्छाई तथा प्रेम के आधार पर सामाजिक संबंधों व संस्थाओं की सृष्टि और पुनः सृष्टि होती है । संपूर्ण भारत समाज व मानव–कल्याण के लिए मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है।

हिन्दी की वर्तमान स्थिति

कविता गुप्ता
सहायक प्राध्यापक
पुस्तकालय विभाग

स्वतंत्रता के बाद पिछले साठ वर्षों में हिन्दी दिवस का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है, आक्रोश को अभिव्यक्ति भी मिलती है। लेकिन ''नौ दिन चले अढ़ाई कोस'' की कहावत की भाँति हिन्दी व्यवहार की स्थिति है। ओह, एक मित्र ने इससे असहमति जताते हुए कहा कि ''गाड़ी तो चली लेकिन रिवर्स गियर में'' स्वतंत्रता के समय हमारा संकल्प था, हममें उत्साह था। लेकिन योजनाकारों ने माना कि आर्थिक विकास के लिए अंग्रेजी आवश्यक है। अंग्रेजी में आउटसोर्सिंग काम विपुल मात्रा में होगा। इस सोच में उत्साहित होकर अंग्रेजी को कक्षा–१ से पढ़ाने वकालत और सिफारिश की। लोकतंत्र में जिसमें पावर उसकी बात, विडम्बना है न?

हिन्दी भाषा की उपादेयता इस बात से प्रमाणित होती है कि यह हमारे बहुसंख्य लोगों की भाषा है, साहित्यकार और कवियों की भाषा है, लोकप्रिय फिल्मों की भाषा है। इसमें विज्ञान और व्यापार की अद्यतन जानकारियाँ भी हैं। यह वोट माँगने की इकलौती सशक्त भाषा है। हिन्दी अपनी भाषा है, गुलामी के बाद पश्चिम के समृद्ध समाज से कदम से कदम मिलाने की चाह ने अंग्रेजी को अपनाया, अंग्रेजियत को ओढ़ा। लेकिन अंग्रेजी से आत्म गौरव और लोगों के प्यार का अनुभव नहीं हुआ। आज दिखावा और आत्मगौरव के बीच द्वन्द है। सभी पेशोपेश में हैं, विचार मंथन करते हैं।

***

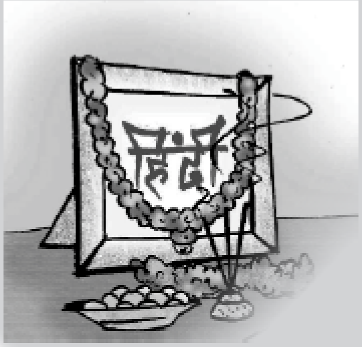

STATUS TO GIRLS

एक लड़की ससुराल चली गई।
कल की लड़की आज बहू बन गई।

कल तक मौज करती लड़की,
अब ससुराल की सेवा करना सीख गई।

कल तक तो टीशर्ट और जीन्स पहनती लड़की,
आज साड़ी पहनना सीख गई।

पिहर में जैसे बहती नदी,
आज ससुराल की नीर बन गई।

रोज मजे से पैसे खर्च करती लड़की,
आज साग–सब्जी का भाव करना सीख गई।

कल तक full-speed स्कूटी चलाती लड़की,
आज bike के पीछे बैठना सीख गई।

कल तक तो तीन वक्त पूरा खाना खाती लड़की,
आज ससुराल में तीन वक़्त का खाना बनाना सीख गई।

हमेशा जिद करती लड़की,
आज पति को पूछना सीख गई।

कल तक तो मम्मी से काम करवाती लड़की,
आज सासू माँ के काम करना सीख गई।

कल तक भाई–बहन के साथ झगड़ा करती लड़की,
आज ननद का मान करना सीख गई।

कल तक तो भाभी के साथ मजाक करती लड़की,
आज जेठानी का आदर करना सीख गई।

पिता की आँख का पानी,
ससुर के गिलास का पानी बन गई,
फिर लोग कहते हैं कि बेटी ससुराल जाकर सीख गई।

(यह बलिदान केवल लड़की ही कर सकती है, इसलिए
हमेशा लड़की की झोली वात्सल्य से भरी रखना.........)

***

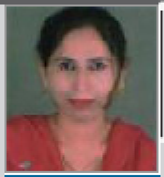

Aisha Khan
Lab Incharge of Psychology

ILL EFFECTS OF USING MOBILES

According to the Food and Drug Administration, cell phones present a minimal health risk for users, including children. However, a 2009 study conducted by Fredrik Soderqvist, a doctoral student at Orebro University in Sweden, indicates that cell phones affect the biology of the brain. .

The effect of mobile phone radiation on human health is the subject of recent interest and study, as a result of the enormous increase in mobile phone usage throughout the world . Mobile phones use electromagnetic radiation in the microwave range. Other digital wireless systems, such as data communication networks, produce similar radiation.

In 2011, International Agency for Research on Cancer (IARC) classified mobile phone radiation as Group 2B - possibly carcinogenic. That means that there "could be some risk" of carcinogenicity, so additional research into the long-term, heavy use of mobile phones needs to be conducted. After that, WHO precised that "to date, no adverse health effects have been established as being caused by mobile phone use. Some national radiation advisory authorities have recommended measures to minimize exposure to their citizens as aprecautionary approach.

Radiation absorption

Part of the radio waves emitted by a mobile telephone handset are absorbed by the body. The radio waves emitted by a GSM handset can have a peak power of 2 watts, and a US analogue phone had a maximum transmit power of 3.6 watts. The maximum power output from a mobile phone is regulated by the mobile phone standard and by the regulatory agencies in each country. In most systems the cellphone and the base station check reception quality and signal strength and the power level is increased or decreased automatically, within a certain span, to accommodate different situations, such as inside or outside of buildings and vehicles. The rate at which energy is absorbed by the human body is measured by the Specific Absorption Rate (SAR), and its maximum levels for modern handsets have been set by governmental regulating agencies in many countries. In the USA, the Federal Communications Commission (FCC) has set a SAR limit of 1.6 W/kg, averaged over a volume of 1 gram of tissue, for the head. In Europe, the limit is 2 W/kg, averaged over a volume of 10 grams of tissue.

Thermal effects

One well-understood effect of microwave radiation is dielectric heating, in which any dielectric material (such as living tissue) is heated by rotations of polar molecules induced by the electromagnetic field. In the case of a person using a cell phone, most of the heating effect will occur at the surface of the head, causing its temperature to increase by a fraction of a degree. In this case, the level of temperature increase is an order of magnitude less than that obtained during the exposure of the head to direct sunlight. The brain'sblood circulation is capable of disposing of excess heat by increasing local blood flow. However, the cornea of the eye does not have this temperature regulation mechanism and exposure of 2-3 hours duration has been reported to produce cataracts in rabbits' eyes at SAR values from 100-140W/kg, which produced lenticular temperatures of 41°C.

Non-thermal effects

Some researchers have argued that so-called "non-thermal effects" could be reinterpreted as a normal cellular response to an increase in temperature. The German biophysicist Roland Glaser, for example,[10] has argued that there are several thermoreceptor molecules in cells, and that they activate a cascade of second and third messenger systems, gene expression mechanisms and production of heat shock proteins in order to defend the cell against metabolic cell stress caused by heat. The increases in temperature that cause these changes are too small to be detected by studies such as REFLEX, which base their whole argument on the apparent stability of thermal equilibrium in their cell cultures.

Blood-brain barrier effects

Swedish researchers from Lund University (Salford, Brun, Persson, Eberhardt, and Malmgren) have studied the effects of microwave radiation on the rat brain. They found a leakage of albumin into the brain via a permeated blood–brain barrier.

Cancer

In 2006 a large Danish group's study about the connection between mobile phone use and cancer incidence was published. It followed over 420,000 Danish citizens for 20 years and showed no increased risk of cancer.

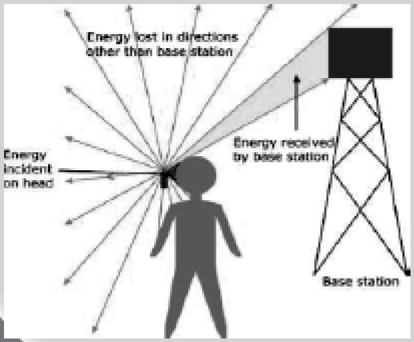
Energy lost in directions other than base station
Energy received by base station
Energy incident on head
Base station

The following studies of long time exposure have been published:

- The 13 nation INTERPHONE project - the largest study of its kind ever undertaken – has now been published and did not find a solid link between mobile phones and brain tumours..

Precautionary measures and health advisories

In May 2011, the World Health Organisation's International Agency for Research on Cancer announced it was classifying electromagnetic fields from mobile phones and other sources as "possibly carcinogenic to humans" and advised the public to adopt safety measures to reduce exposure, like use of hands-free devices or texting.

Some national radiation advisory authorities, including those of Austria, France, Germany, and Sweden, have recommended measures to minimize exposure to their citizens. Examples of the recommendations are:

- Use hands-free to decrease the radiation to the head.
- Keep the mobile phone away from the body.
- Do not use telephone in a car without an external antenna.

The use of "hands-free" was not recommended by the British Consumers' Association in a statement in November 2000 as they believed that exposure was increased. However, measurements for the (then) UK Department of Trade and Industry and others for the French l'Agence française de sécurité sanitaire environnementale showed substantial reductions. In 2005 Professor Lawrie Challis and others said clipping a ferrite bead onto hands-free kits stops the radio waves travelling up the wire and into the head.Several nations have advised moderate use of mobile phones for children.

...

अगले जन्म मोहे बिटिया ही कीजो

Gargi Saxena
Student B.Ed

आज अगर यूं देखें तो लगता है कि भगवान ने सारी खुशियाँ इन बेटियों की झोली में ही डाल दी है। आज तक महिलाओं के नाम पर शासन सिर्फ पुरूषों ने ही किया है। महिलाओं को आगे आने का मौका ही नहीं दिया। एक बेटी ही तो बहन है, पत्नी है और सबसे बढ़कर एक माँ है। और परिवार को जोड़कर रखने वाली डोर है और इतना ही नहीं संपूर्ण पृथ्वी की सृजनकर्ता है बेटियाँ।

बेटियाँ ममता की सूरत है इनकी उपलब्धियाँ असीम हैं। आपके जीवन को अमृत तुल्य बनाने वाली बेटियों को इतना लाड़ प्यार दो कि हर लड़की की जुबां पर यह शब्द हो कि 'अगले जन्म मोहे बिटिया ही कीजो। बेटियाँ एक अनोखा उपहार है। भगवान के दिए हुए इस उपहार को मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकती हूँ। बेटियाँ घर को सजाती है, घर को संवारती हैं, बेटियाँ ही परिवार की लक्ष्मी है। देश के विकास में अगर लड़कियों के हौसले देखे तो हर क्षेत्र में इन्होंने अपना परचम फहराया है।

आजादी के पूर्व भी तथा बाद में भी। पहले तो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, राजस्थान में कालीबाई जिन्होंने आजादी के लिए अपने प्राण दिए थे और आजादी के बाद में इंदिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल, कल्पना चावला, सायना नेहवाल, पी.टी. ऊषा, किरण बेदी आदि न जाने ऐसी कितनी बेटियों ने अपना हुनर दिखाया। इन्होंने आसमान की ऊंचाई से लेकर समुद्र की गहराइयों तक अपना परचम फहराया। इन बेटियों पर केवल इनके माता–पिता व परिवार को ही नहीं बल्कि पूरे राज्य, देश यहाँ तक कि पूरे विश्व को इन पर नाज है। सभी माता–पिता लड़कियों को पढ़ाएँ, इनके हौसलों को बढ़ाएँ। इनको किताबी शिक्षा का ज्ञान देना ही सीमित नहीं बल्कि इनमें नैतिक गुणों का विकास होना बहुत ज़रूरी है।

मेरे माता–पिता ने मेरा हर मोड़ पर हर समय हर परिस्थिति में सहयोग दिया। उन्होंने कभी हम भाई–बहनों में भेदभाव नहीं किया। वे हर समय मेरा हौंसला बढ़ाते हैं।

...

चुटकुले

Anubhuti Dixit
Student B.Ed

1. एक औरत अपनी पड़ोसन से कहती है तुम्हारा पति पाइप से ऊपर क्यों चढ़ रहा था, पड़ोसन ने कहा–उनके पैर में फ्रेक्चर है इसलिए डॉक्टर ने उन्हें सीढ़ियां चढ़ने से मना किया है।
2. चीकू–(अपने दोस्त मीकू से) मेरे चाचाजी इतने उदार थे कि मरते वक्त अपनी सारी संपत्ति अनाथ को दान कर गए।

   मीकू–संपत्ति में क्या था?

   चीकू–दो बेटियाँ और एक बेटा।
3. मोहन का बेटा–पापा–पापा आपकी दा.....

   मोहन–कितनी बार कहा है कि खाना खाते वक्त बीच में मत बोला करो।

   खाना खाने के बाद मोहन–हाँ अब बोलो।

   बेटा–पापा मैं तो सिर्फ इतना कह रहा था कि आपकी दाल में मक्खी गिर गई है।
4. पुलिस–तुम्हे फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है।

   चोर–मेरी आखिरी इच्छा है कि मेरी जगह किसी और को फाँसी पर चढ़ा दिया जाए।
5. अध्यापक–बेटा तुम किस खानदान से हो।

   छात्र–मास्टर जी, मैं जानवरों के खानदान से हूँ।

   अध्यापक–हैरानी से, वो कैसे?

   छात्र–मेरे पापा कहते है उल्लू कहीं का। माँ कहती है गधा। दादाजी शेर का बेटा कहते है और दादी कहती है नटखट बंदर।
6. एक बेवकूफ ने अपनी धोती उतारकर सूखने को फैलाई थी। इतने में जोर से हवा चली और धोती उड़कर कुएँ में जा गिरी।

   बेवकूफ बोला–अच्छा हुआ मैंने धोती उतारकर रख दी थी नहीं तो धोती के साथ मैं भी कुएँ में गिर जाता।

...

Challenge Negative thoughts

Anushri Rai
Student D.Ed

Fear of failure is the most hazardous speed-breaker on the highway that leads to success in any aspect of life. "Of course I have prepared hard, but will I ultimately get through?" is a common refrain among students preparing for various competitive exams.However; one should try one's best not to stumble over this speed-breaker.

Positive thinking has enormous impact on our lives. It has been established by empirical researches that optimistic fare better than pessimists in almost every walk of life. Positive thinking not only helps you achieve greater success in life but affects your health too. Optimistic have been found to be less susceptible to depression and physical illness-the two major stumbling blocks on the road to success in any field. Psychologists and medical experts have found evidence that optimism bolsters the immune system.

Power of positive thinking is inculcated in us from the childhood through our parents at home and teachers in school. Every family encompasses some crisis or problem once in while. The reaction of elders, especially the parents, to that crisis has a substantial bearing on the psychological development of children in the family. Suppose a newly purchased TV set develops some snag. There are two possible ways in which the head of the family will react. He will either lament "why did I pick such a lousy TV set?" Or he will declare, "I will go to the showroom and ask the dealer to replace the set." The first approach suggests that the harm has been finally done and one has no option but to compromise with the situation. The second reaction gives the message that there is always a way out of a difficult situation.

Don't give up when you are confronted by a setback. Look for the light at the end of the tunnel. Don't get overwhelmed by thought, "Nothing I do matters." Try your best to improve the situation. Have faith in your abilities. Think positive. Luckily, latest research in human behavior shows that optimism is a skill any can master.

Be specific. Don't try to diversify your target. Break down larger goals into smaller ones to keep from being paralyzed by the enormity of your task. With each interim goal you reach, you'll see progress. You will feel energized and excited about what's to come. And that is the power of positive thinking.

***

TIMES Have CHANGED

Preeti Sikaria
Student B.Ed

25 Years ago.............

A program was a television show.

An application was for employments.

Windows was something you hated to clean.

A keyboard was a piano.

Memory was something you lost with age.

Compress was something to do with your garbage.

A hard drive was a long drive on road.

'Log on' was adding wood to fire.

A mouse pad was where a mouse lived.

Paste was something you did with glue.

A web was spider's home.

A virus was flu.

And chips were something to be eaten.

Surely the times have changed....

***

अगर रख सको तो एक निशानी हूँ मैं

Sanjay Dixit
Student Dixit

अगर रख सको तो एक निशानी,
हूँ मैं खो दो तो सिर्फ एक,
कहानी हूँ मैं, रोक पाये,
न जिसको ये सारी दुनिया वो,
एक बूंद आँख का पानी हूँ मैं।

सबको प्यार देने की आदत है हमें,
अपनी अलग पहचान बनाने की आदत है,
हमें कितना भी गहरा जख़्म दे कोई,
उतना ही ज्यादा मुस्कुराने की आदत है हमें।

इस अजनबी दुनिया में अकेला ख्वाब,
हूँ मैं सवालों से खफा छोटा सा,
जवाब हूँ मैं जो समझ न सके,
मुझे उनके लिए '' कौन '' जो समझ गए।

उनके लिए एक खुली किताब हूँ मैं,
आँख से देखोगे तो खुश पाओगे दिल से,
देखोगे तो दर्द का सैलाब हूँ मैं,
अगर रख सको तो निशानी, खो दो तो सिर्फ।
कहानी हूँ मैं।

***

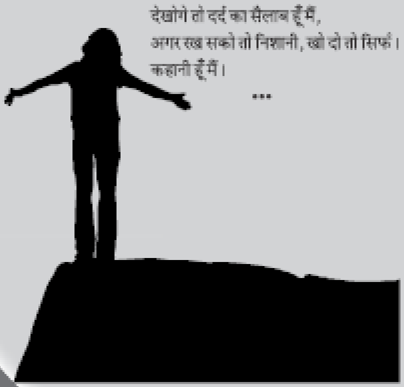

बदल गया इंसान

Arti Soni
Student B.Ed

बदल गया इंसान देखो बदल गया इंसान,
भूल गया अपना फर्ज और इमान,
बदल...

झूठ के सैलाब में बह गई इंसान की सच्चाई,
अभिशाप बन कर रह गई कलयुग में भलाई।
बहे हैं आंसू उसी के जिसने की अच्छाई
नेकी ने तो इस युग में है झूठ से मुँह की खाई।
बदल गया.....................................

धोखे और फरेब ने ऐसा मन को घेरा,
कि बुराइयों का फैल गया हर तरफ अँधेरा।
लालच ने इंसान पर ऐसा जादू फेरा,
रिश्तों में भी झलक रहा है तेरा और मेरा।

ऐ इंसान खा गए तेरी इंसानियत,
क्यों बदल गई तेरी नियत।
क्यूँ नहीं रख पाया तू सच्चाई का मान,
तूने तो कर दिया मानवता का अपमान।
बदल गया................................

***

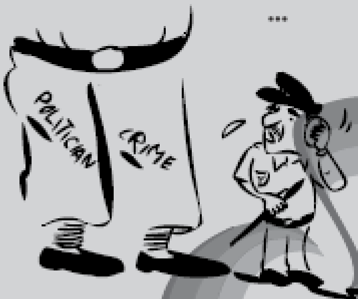

“मैं” अश्रुपूरित नमनों के बीच जीवन की शुरूआत हूँ मैं

मातृत्व की गोद में प्यारी सी किलकार हूँ मैं।
छोटी सी काया मेरी कितनी सूक्ष्माकार हूँ मैं।
जीवन की बाल्यावस्था पर चढ़ती परवान हूँ मैं।
छा जाने को वसुंधरा पर पूर्णतया तैयार हूँ मैं।
गुड्डे–गुड़ियों के खेलों में दुनिया से अंजान हूँ मैं।

विद्यालय की परिपाटी पर एक नयी संस्कार हूँ मैं।
कभी सही हूँ कभी गलत हूँ रोज नया अध्याय हूँ मैं।
जीवन की तरूणावस्था पर चढ़ती परवान हूँ मैं।
छा जाने को वसुंधरा पर, पूर्णतया तैयार हूँ मैं।
किसी के लिए वफादार तो किसी की जिम्मेदार हूँ मैं।
रह गया जो कभी अधूरा माता पिता का तो ख्वाब हूँ मैं।
संघर्षों की रणभूमि पर, कर्मठ हूँ बलवान हूँ मैं।

जीवन की युवावस्था पर चढ़ती परवान हूँ मैं।
छा जाने को वसुंधरा पर, पूर्णतया तैयार हूँ मैं।
परिपक्वता की पराकाष्ठता पर, कितनी चरितार्थ हूँ मैं।
अनुभवों की उत्कृष्टता पर, अंतिम उपसंहार हूँ मैं।
बीती बैठने की शैय्या पर, मृत्यु का इंतज़ार हूँ मैं।
जीवन की बाल्यावस्था पर, चढ़ती परवान हूँ मैं।
छा जाने को वसुंधरा पर, पूर्णतया तैयार हूँ मैं।

“जितना अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें
अपने अज्ञान का आभास होता जाता है।”

***

Archana Diwakar
Student B.Ed

आ रही हैं लड़कियां

Nazma Khatoon
Student B.Ed

आजकल की लड़कियाँ ना कल में जीती हैं। और ना आज में वे तो जीती हैं अब में।

हँसती है, खिलखिलाती हैं।

लड़के–लड़की में भेद किए बिना दोस्त बनाती हैं।

लड़कियाँ अपने–अपने किस्से कहानियाँ खुलकर फेसबुक पर बतलाती हैं लड़कियाँ।

मन से उठकर चल देती हैं किसी कैफे रेस्तरां में या सिनेमा हॉल में या फिर किसी दोस्त के घर हुड़दंग करने लड़कियाँ।

डराते तो बहुत हैं अँधेरे।

पर अँधेरी अंजान जग हो, दूरियाँ, धमकियों से हमारी तरह कहाँ डरती है आजकल हमारी लड़कियाँ।

निपटाती है सहजता से सारे अपने काम काज चाहे घर के हो, बाजार के या दफ्तर के।

बड़ी खूबसूरती से कर रही है अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह लड़कियाँ।

वे जान गई है यह सच कि किसी ने नहीं देखा आने वाला कल।

अब तक उनके साथ होता आया है लोक–लाज, नाक–इज्जत, संस्कृति, परंपरा धर्म के नाम पर घिनौना छल।

वे जान गई है ये जो जिंदगी मिली है यही है सच कि किसने देखा कल

इसलिए लड़कियाँ जी रही है हर पल

आगे कदम बढ़ाए जा रही है लड़कियाँ दुनिया वालों "स्वागत" करो।

"कि अब आ रही है लड़कियाँ"

***

माँ
की चाहत

Kumari Pushpita
Student B.Ed

माँ हूँ मैं, ममता की छाँव हूँ मैं।
राजा की रंक की,
चोर की फकीर की,
चाहत का अंबार हूँ मैं।
कभी किस्मत पर इठलाती,
कभी किस्मत पर रोती।
कभी विधाता को कोसती,
कभी करनी पर पछताती।
सबको अपना समझती
आखिर माँ हूँ मैं।
क्या है मेरी चाहत?
न समझ पाती मैं।
मेरी झोली का सब कुछ,
बच्चों पर लुटाती मैं।
पर जब थोड़ी चाहत होती मेरी,
जब जवानी जाती।
जरा पास आता, बच्चों के सहारे की आस में,
बुढ़ापा कट जाता।
फिर भी मुझे शिकायत नहीं किसी से,
आखिर धरा का अंग धरनी के जैसी।
आखिर माँ हूँ मैं......
ममता मेरी अनमोल
फिर भी चुकाती हूँ मोल।
राम की माता कौशल्या हूँ मैं,
गांधारी हूँ, कुंती हूँ, परशुराम की माता हूँ मैं।
मेरी पहचान तो यही है, आखिर ममता की मूरत
माँ हूँ मैं। माँ हूँ मैं।

•••

सुविचार

**अभिमान किसी को
ऊपर उठने नहीं देता,
और
स्वाभिमान किसी को
नीचे झुकने नहीं देता।**

दिक्षा लोधी
बी.कॉम
सी.एम.

वक़्त

एक कविता जिसका शीर्षक वक़्त नहीं
हर खुशी है लोगों के दामन में पर एक
हंसी के लिए वक़्त नहीं है।

दिन रात दौड़ती दुनिया में जिंदगी के
लिए वक्त नहीं।

माँ की लौरी का एहसास तो है पर माँ को माँ कहने का वक़्त नहीं
हर पल मरने वालों को जीने के लिए भी वक्त नहीं

ग़ैरों की क्या बात करें जब अपने सपनों के लिए ही वक़्त नहीं

12
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11

आँखों में है नींद बहुत

पर सोने के लिए वक्त नहीं

दिल घावों से भरा

पर रोने के लिए भी वक्त नहीं

पैसे की दौड़ में ऐसे दौड़े

कि थकने का भी वक्त नहीं

पराये एहसासों कि क्या कद्र करें

जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं

•••

Monika Pawar
Student B.Ed

लक्ष्य

Mohd. Khalid
Student B.Ed

आँखें खोल उठ चल रे मन,
पथ पर गर बढ़ जाएगा,
विजय तेरा माथा चूमेगी,
गर पहला कदम बढ़ाएगा।

तेरा पथ पथरीला है,
कैक्टसों की भरमार है,
कठिन चाहे राह है तेरी,
मंज़िल पर उद्धार है।

कर्म ही तेरा लक्ष्य हो गर,
मंज़िल पास है तेरे,
बिना कर्मठता व्यर्थ लगाएगा,
तमाम उम्र तू फेरे।

अर्जुन की आँख लेकर,
साध निशाना लक्ष्य की ओर,
सफलता झूमेगी पाँवों पर,
दिखेगी सामने नई भोर।

...

'ईश्वर जवाब माँगेगा'

सीमा नामदेव
बी. कॉम सी.सी.ए.
तृतीय सेम.

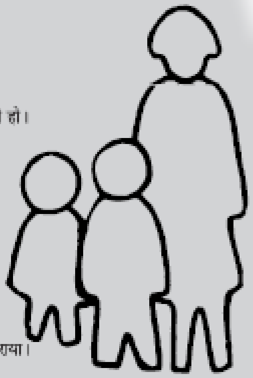

ईश्वर यह नहीं पूछेगा कि,
आप कितने बड़े घर में रहते हो।

ईश्वर यह पूछेगा कि,
आपका दिल कितना बड़ा है।

ईश्वर यह नहीं पूछेगा कि,
आप कितनी साफ–सफाई से रहते हो।

ईश्वर यह पूछेगा कि,
आपका चरित्र कैसा है।

ईश्वर यह नहीं पूछेगा कि,
आपने कितने उपवास किये है।

ईश्वर यह पूछेगा कि,
आपने कितने भूखों को भोजन कराया।

ईश्वर यह नहीं पूछेगा कि,
आप कितनी पूजा–पाठ करते हो।

ईश्वर यह पूछेगा कि,
आप अपने माता–पिता की कितनी सेवा करते हो।

ईश्वर यह नहीं पूछेगा कि,
आपने कितनी ऊँचाइयों को छुआ है।

ईश्वर यह पूछेगा कि,
आप कैसे इंसान हो?

...

Pooja Mishra
Student B.Ed

कला का छात्र

Varsha Pandey
Student B.Ed

- बंगाल के एक आर्ट कॉलेज में एक अमीर छात्र ने दाखिला लिया वह रहन–सहन में बेहद लापरवाह था। हॉस्टल में उसका कमरा हमेशा गंदा रहता। उसकी शिकायत कॉलेज का प्राचार्य तक पहुंची, लेकिन कोई हल न निकला। एक दिन वह उठा तो उसे उसका कमरा साफ सुथरा मिला। ऐसा कई दिन तक हुआ।
- उसे लगा कि हॉस्टल के नौकर ने इनाम के लिया ऐसा किया होगा। उसके नौकर को बुलाया और कुछ पैसे देते हुए कहा–यह लो तुम्हारा इनाम। नौकर ने पूछा–इनाम किस लिए?
- तो छात्र बोला–क्योंकि तुम रोज मेरे कमरे की सफाई करते हो। नौकर ने कहा– मैं तो कभी आपके कमरे में गया ही नहीं। छात्र हैरान हो गया कि फिर सफाई किसने की?
- इसका पता लगाने के लिए वह रात में देर तक जगा रहा और सोने का नाटक करता रहा। आधी रात को कोई उसके कमरे में आया और चीजें व्यवस्थित करने लगा। छात्र ने उठकर उसका हाथ पकड़ लिया। उसे देखते ही छात्र सन्न रह गया। वे कॉलेज के प्राचार्य थे। छात्र उनके पैरों में गिरकर माफी मांगने लगा। प्राचार्य ने कहा–तुम यहाँ कलाकार बनने आए थे लेकिन कला के लिए निर्मल मन व सौंदर्य दृष्टि चाहिये। जो तुममें नहीं है।
- मैं चाहता हूँ तुम कम से कम अच्छे इंसान बनकर जाओ

उपरोक्त कहानी से हमें यह शिक्षा मिलता है कि 'फूहड़ता में कला का वास नहीं होता।'

...

सुनो द्रोपदी...

सुनो द्रोपदी शस्त्र उठा लो,
अब गोविन्द ना आएँगे।

छोड़ो मेंहदी खड्ग संभालो,
खुद ही अपना चीर बचा लो,

जाल बिछाए बैठे शकुनि,
मस्तक सब बिक जाएँगे।
सुनो द्रोपदी शस्त्र उठालो, अब
गोविन्द ना आएँगे।।

कब तक आस लगाओगी तुम
बिके हुए अखबारों से,
कैसी रक्षा माँग रही हो, दुशासन दरबारों से,
स्वयं जो लज्जा हीन पड़े हैं
वे क्या लाज बचाएँगे।
सुनो द्रोपदी शस्त्र उठालो, अब गोविन्द
ना आएँगे।।

कल तक केवल अंधा राजा,
अब गूँगा–बहरा भी है,
होंठ सिल दिए हैं जनता के,
कानों पर पहरा भी है,
तुम ही कहो ये अश्रु तुम्हारे,
किसको क्या समझाएँगे?
सुनो द्रोपदी शस्त्र उठालो,
अब गोविन्द ना आएँगे।।

...

Hari Prakash
Student B.Ed

क्या आप जानते हैं?!

Rajneesh Kumar
Student B.Ed

1. विश्व का सबसे अशिक्षित देश–सोमालिया है।
2. वेटिकन सिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है।
3. गरनाई मछली पानी में तैरती है, हवा में उड़ती है और जमीन पर चलती है।
4. विश्व में कंगारू ऐसा जीव है जो जिन्दगी भर बिना पानी पिए जीता है।
5. विश्व में आग बरसाने वाला पेड़ मलेशिया में है।
6. भालू ऐसा जानवर है जो घायल होने पर मनुष्य की तरह रोता है।
7. भारत व चीन के बीच मेकमोहन रेखा है।
8. फ्रांस मच्छर रहित देश है, वहाँ एक भी मच्छर नहीं है।
9. विश्व में चीन की सीमा पर तेरह देश हैं।
10. चींटी के पंखों की संख्या होती है पूरे सात हजार।
11. कोरियाई देश के लोग रोजाना 30 हजार साँप चट कर जाते हैं।
12. दक्षिण पूर्वी एशिया का महाकाल बैम्बू का पौधा 24 घंटे में एक मीटर बढ़ जाता है।
13. शार्क के सूँघने की क्षमता बहुत तीव्र होती है। एक खून की बूंद भी पानी में गिर जाए तो वह एक मील दूर से समझ जाएगी।
14. इस दुनिया की कुल आबादी से कहीं ज्यादा बैक्टीरिया जीवाणु हमारे मुँह में पाए जाते हैं।
15. पेंग्विन में खारे पानी को स्वच्छ जल में बदल देने की क्षमता होती है।
16. हमारी धरती पर अंटार्कटिका ही एकमात्र ऐसी जगह है जिस पर किसी भी देश का अधिकार नहीं है।

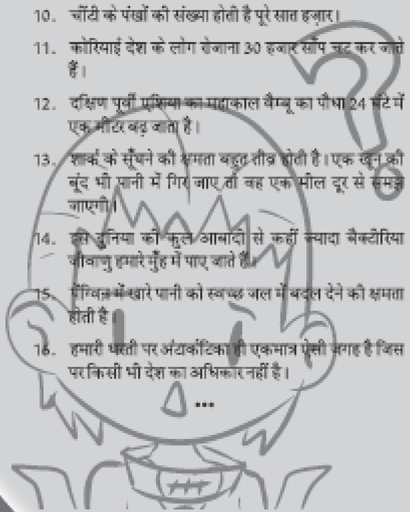

...

ईश्वर का वरदान

मैंने ताकत माँगी,

पर ईश्वर ने कठिनाई दी,

जिससे मैं मजबूत हो सकी।

मैंने बुद्धि माँगी,

पर ईश्वर ने सुलझाने के लिए,

समस्याँ दे दी।

मैंने समृद्धि माँगी,

पर ईश्वर ने मुझे काम करने के लिए,

दिमाग व बाहुबल दे दिया।

मैंने साहस माँगा,

पर ईश्वर ने मेरे पास मदद माँगने वाले,

मुसीबत ग्रस्त लोगों को भेज दिया।

मैंने सहायता माँगी,

पर ईश्वर ने मुझे अवसर दिया।

मैंने जो माँगा, नहीं मिला,

लेकिन जो मुझे चाहिए,

वो सब मिल गया।

...

साहसी बालक

Vandana Yadav
Student B.Ed

स्कूल की छुट्टी हुई। एक बालक अपने कंधे पर बस्ता लटकाए हुए निकला तो उसने देखा कि एक मजबूत कद–काठी वाला नौजवान दुबले पतले लड़के को बेंत से मार रहा है। उसने मधुर शब्दों से उस बलशाली युवक से पूछा, 'भाई साहब, आप इस लड़के को कितनी बेंत मारना चाहते हैं? युवक ने झिड़कते हुए कहा 'इससे तुम्हे क्या मतलब? उस बालक ने धीर से कहा, मैं इतना ताकतवर तो नहीं हूँ कि इस बालक के पक्ष में आप से लड़ सकूँ, किंतु मैं इतना अवश्य कर सकता हूँ कि इसकी पिटाई में हिस्सेदार बन जाऊँ। युवक ने पूछा 'क्या मतलब?' बालक ने कहा मेरा मतलब है कि आप इस लड़के को जितनी बेंत मारना चाहते हो, उसकी आधी मेरी पीठ पर मार लीजिए। युवक ने उस साहसी बालक को आश्चर्य से देखा। उसे अपने आप पर शर्म आई कि कमजोर लड़के को बुरी तरह से पीट रहा है। और एक यह लड़का है, जो उसके बदले मार खाने के लिए तैयार है। उसने उसी क्षण बेंत तोड़कर फेंक दी। उस कमजोर लड़के को बचाने वाला वह साहसी बालक आगे चलकर अंग्रेजी साहित्य में कवि 'लार्ड बायरन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

***

चुटकुले

Manish Mishra
Student B.Ed

1. एक मुर्गी ने बाज से शादी कर ली, शादी के बाद मुर्गे ने मुर्गी से कहा–हम क्या मर गए थे। जो तुमने इस बाज से शादी कर ली।

- मुर्गी बोली–शादी तो मैं तुमसे ही करना चाहती थी पर पिताजी की जिद थी कि लड़का एयर फोर्स में हो।

2. एक नर्सरी कक्षा का लड़का नर्सरी कक्षा की लड़की से बोलता है–तुम मुझसे शादी करोगी। लड़की क्यूं करूँ लड़का मैं तुम्हे एक चॉकलेट दूँगा। लड़की अले याल मुझे पहले ही किसी ने कुलकुले में मना लिया है।

***

HA HA HA
HA HA HA

दहेज का दंश

Aditya Tiwari
Student B.Ed

दहेज एक दंश है
आज के जमाने का कंस है।
बेटे कमाई का स्त्रोत है
बेटियाँ आज भी बोझ हैं।।

कहते हैं बेटा बेटी में फर्क नहीं
लेकिन इसमें कोई तर्क नहीं।
बेटियों को आज भी जलाया जाता है
उनके अरमानों को आज भी दफनाया जाता है।।

क्यूँ हमेशा बेटियों की बलि चढ़ी
क्यूँ हमेशा उसके सपनों की धज्जियां उड़ीं।
क्या उसका हक नहीं सपने बुनने का
क्या उसका हक नहीं किसी अपने को चुनने का।।

क्यूँ उसके लिए समाज के दायरे हैं
क्यूँ उसके लिए ही सारे कायदे हैं।
क्या हम इसे मिटा नहीं सकते
क्या हम इसे दफना नहीं सकते।।

हम जानते हैं यह एक बुराई है
पर इसके पीछे नहीं कोई खुदाई है।
बेटियाँ बलि चढ़ती रहेंगी
बेटों की मांग बढ़ती रहेगी।।

पर एक दिन ऐसा आएगा
न बेटियाँ रहेंगी न दहेज रहेगा।
उस वक्त माँग लेना दहेज
और उसको रखना तुम सहेज।।.....

***

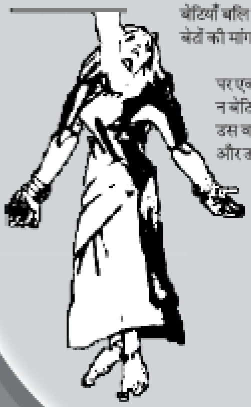

आज की राजनीति

Alka Diwakar
Student B.Ed

देखकर आज की राजनीति को
मैं सोच में पड़ जाता हूँ
हसूँ या रोऊँ समझ नहीं पाता हूँ।

क्या यही है वह गाँधी का देश
जिसको शहीदों ने अपने रक्त से सींचा था।

कहाँ गये वे नेहरू और पटेल
जो रखते थे आपस में मेल।

बस आज की राजनीति बनकर रह गई है
बस एक खूनी खेल।

आज के राजनेता बस एक ही मंत्र जानते हैं
लोकतंत्र को वह अपना गणतंत्र मानते हैं।

सत्ता को पाने के लिए वादों का मंत्र फैलाते हैं
जनता को बहलाते, जनता को फुसलाते हैं।

सत्ता मिलने पर वह संकल्प भूल जाते हैं
और जनता को पूछे जाने पर
एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं
और वे दंगे भी करवाते हैं।

आखिर कब तक चलता रहेगा यह खूनी खेल,
कौन सा वह स्टेशन आएगा जहाँ रुकेगी यह रेल
और मिलेगी इन सभी भ्रष्ट नेताओं को जेल।

***

ममतामयी माँ

Anuradha Rathore
Student B.Ed

जब तुमने धरती पर पहली साँस ली माँ तेरे साथ थी...
माँ–बाप अंतिम साँस लें, तब तुम उनके पास रहना,

पहले आँसू आते थे और तू याद आती थी,
माँ आज तू याद आती है और आँसू आते हैं,

5 वर्ष का अपना बेटा आपके प्रेम की चाह रखता है तो...
70 वर्ष के माँ–बाप आपसे प्रेम की चाह क्यों नहीं रखेंगे?

माँ–बाप की आँखों में दो बार आँसू आते हैं,
बेटी घर छोड़े तब.....बेटा तर छोड़े तब....

संसार की दो करूणता
माँ बिना का घर.....घर बिना की माँ,

अमृत के अक्षय खजाने के समान माता–पिता
की शीतल छाया में वर्षों तक रहने का

अवसर भाग्यशाली संतानों के ही नसीब में होता है,
बचपन में जिसने तुम्हें चलना सिखाया

बुढ़ापे में उन माँ–बाप का सहारा बनना
पत्नी पसंद से मिलती है...माँ–बाप पुण्य से मिलते हैं.....

पसंद से मिलने वाली चीज के लिए
पुण्य से लिए माँ–बाप को कभी ठुकराना नहीं,

डेढ़ किलो सामान उठाने पर तुम्हारे हाथ दुखने लगते हैं तो....
जन्म देने वाली माँ ने तुम्हे नौ महिने पेट में

कैसे रखा होगा, इसका कभी विचार किया है।
जिस दिन माँ–बाप तुम्हारे कारण रोते हैं

उस दिन तुम्हारा किया हुआ पुण्य उन आँसुओं में बह जाता है,
जन्म देने वाली माँ को दुःख देकर रूलाता है

मंदिर में बैठी माँ की चुनरी ओढ़ता है....
याद रख, मंदिर की माँ तुझ पर खुश नहीं होगी

होगी यदि होगी तो खफा जरूर होगी
घर बड़ा होने से साथ नहीं रहा जाता
मन बड़ा होने से साथ रहा जाता है....

ज्ञानयज्ञ में आप भी आहूति दें

Ankita Singh
Student B.Ed

- समस्त कठिनाइयों का एक ही उद्गम है– मानवीय दुर्बुद्धि। जिस उपाय से दुर्बुद्धि को हटा कर सद्बुद्धि स्थापित की जा सके, वही मानव कल्याण का, विश्व शांति का समाधान कारक मार्ग हो सकता है।

सफलता

- जिन विचारों का मनोभूमि में स्थायी में प्रभाव पड़ता है। और जिनसे अंतः करण में अमिट छाप पड़ती है। वे पुनरावृत्ति के कारण स्वभाव के एक अंग बन जाते हैं। ऐसे विचारों का अपना एक विशेष महत्व होता है। इन विचारों को क्रमबद्ध रीति से सजाने की क्रिया जिन्हें ज्ञात होती है वे अपना भाग्य, दृष्टि कोण और वातावरण परिवर्तन कर सकते हैं और इस परिवर्तन के फलस्वरूप जीवन में कोई विशेष दृश्य या स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं।

...

पढ़ाई का महत्व

Bharti Pal
Student
B.Ed

एक गाँव था। उस गाँव में अनेक लोग रहते थे। उन अनेक लोगों में से कमल और उसकी पत्नी रेखा भी रहते थे। उनके दो बच्चे भी थे। राजू और मीना कमल और रेखा सोचते थे कि बेटे राजू को पढ़ा लिखाकर बड़ा आदमी बना देंगे और वह खूब नाम कमाएगा और मीना के बारे में सोचते थे कि उसे घर का काम काज सिखाकर शादी कर देंगे। ससुराल जाएगी तो सास–ननदों की बातें तो न सुननी पड़ेंगी। राजू पाठशाला जाता था। राजू को पाठशाला जाते देख मीना बहुत दुःखी होती और रोने लगती थी। वह सोचती थी कि माँ और पिताजी मुझमें और राजू में इतना फर्क क्यों करते हैं? राजू पाठशाला जाता है और मैं क्यों नहीं जा सकती? उसने सोच लिया कि वह शाम को पिताजी से बात करेगी। शाम को पिताजी खेत पर से वापस आए तो पिताजी ने वहाँ देखा कि दरवाजे के पास बैठी मीना रो रही थी। उसे रोता देख पिताजी ने कहा–अरे बेटी क्यों रो रही है? मीना ने कहा–पिताजी! राजू पाठशाला जाता है। आप मुझे पाठशाला क्यों नहीं जाने देते हैं? मेरा पढ़ाई करने का बहुत मन होता है। पिताजी ने कहा–बेटा मीना! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि हमारे समाज में बेटियाँ पाठशाला नहीं जाया करती हैं। मीना ने कहा पर पिताजी पाठशाला में दूसरी लड़कियाँ भी जाती हैं फिर मैं क्यों नहीं? मेरा भी तो अधिकार है। क्या मैं और राजू आपके लिए अलग–अलग हैं? पिताजी ने कहा–नहीं मीना मैंने तो कभी भी तुझमें और राजू में फर्क नहीं समझा। फिर पिताजी आप मुझे पाठशाला क्यों नहीं जाने देते? उतने में ही मीना की माँ आती है। कमल कहता है कि रेखा अच्छा हुआ तुम आ गई। तुम्हीं समझाओ इस मीना को। कहती है कि हम राजू और मीना में फर्क समझते हैं। बेटी मीना तुम्हें ऐसा क्यों लगता है? माँ आप पूछती हो कि मुझे ऐसा क्यों लगता है। आप दोनों राजू को पाठशाला भेजते हो और मुझे क्यों नहीं भेजते। मीना रोती–रोती अपने घर में चली जाती है। फिर कमल और रेखा भी अपने कमरे में चले जाते हैं। रात को कमल को एक सपना आता है कि राजू पढ़–लिखकर बड़ा आदमी बन गया और उसे अपनी पढ़ाई पर बहुत घमंड है। वह अपने माँ–बाप को गालियाँ देता है। उन्हें खाने को नहीं देता है। वही दूसरी ओर मीना की शादी हो जाती है और उसे सुबह–शाम सास–ससुर और पति की गालियाँ सुननी पड़ती हैं। उसे रोज ताने मिलते है कि माँ–बाप ने तुम्हें पढ़ाया नहीं और हमारे गले बांध दिया। मीना खूब रोती है। उतने में ही कमल का सपना टूट जाता है। कमल तुरंत उठकर पाठशाला जाता है। और मीना का नाम लिखवा आता है। मीना बहुत खुश होती है। राजू और मीना खुशी–खुशी पाठशाला जाने लगते हैं।

भाइयों और बहनों आप लोग कभी भी बेटे और बेटी में फर्क मत समझिये। बेटे को पढ़ाएँ और बेटी को भी पढ़ाएँ।

जीवन का है यह संदेश,
पढ़ा लिखा हो अपना देश।
जीवन के सुख का आधार,
पढ़ा लिखा हो 'हर परिवार'।

...

गुरू ज्ञान

अल्प ज्ञान	बुद्धिमान व्यक्तियों से बहस करना मूर्खता है। मूर्ख व्यक्ति के साथ कभी कलह नहीं करना चाहिए मित्र के साथ झगड़ा करना अपना ही अहित करना है। गुरुओं के साथ बहस करना अपने आपको ज्ञान से वंचित रखना है। मूर्खों की मूर्खता के कारण उनसे झगड़ा हो जाता है। लेकिन जहाँ तक हाक सके मूर्खों से बचना ही बुद्धिमानी है। सज्जन लोगों के साथ विवाद करना मूर्ख लोगों का स्वभाव होता है। बुद्धिमान को वाद विवाद द्वारा मूर्ख को संतुष्ट करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि अल्प ज्ञान वाले व्यक्ति को तो भगवान भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
धर्म ग्रंथ	किसी के दोषों को न देखो। दूसरों को तकलीफ न दो। खाने–पीने में संयमित रहो तथा ध्यान लगाने की पूरी चेष्टा करो तभी मनुष्य का जीवन संपूर्ण माना जाता है।

...

हमारा गाँव

Archana Pali
Student B.Ed

मैं बिहार के एक छोटी से गाँव की रहने वाली हूँ। मेरे पिताजी किसान और माँ गृहिणी हैं। मेरे माँ बाप का सपना था कि अपनी बेटी को पढ़ने के लिए बाहर दूसरे शहर में भेजें। आज मैं अपने गाँव से पढ़ाई करने आई हूँ। माँ बाप का सपना जरूर पूरा करूँगी। मेरे गाँव का सबसे अच्छी फसल धान और गेहूँ है। धान और गेहूँ जब पक जाता है तो सोने की तरह लहलहाते दिखते हैं इसलिए हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता है। मेरे गाँव का महान पर्व छठ पूजा माना जाता है। यह पर्व विधिपूर्वक किया जाता है, आपस में लोग मिल जुलकर मनाते हैं। मेरे गाँव के लोगों को उम्मीद रहती है कि मैं जरूर कुछ करूँ और मैं जरूर करूँगी और गाँव, घर की उम्मीद जरूर पूरी करूँगी।

लोग पढ़ना लिखना छोड़ देते हैं
आवारा बनकर जिन्दगी गुजार देते हैं
माँ बाप खून बेच कर पढ़ाते हैं
उनकी आशा निराशा में बदल देते हैं

...

श्रद्धांजली

Dr. Kalpana Teware
HOD, Life Science Dept.

श्रद्धासुमन ''एक ख्वाब एक एहसास''

इस छोटी सी ज़िंदगी में कुछ लोग ऐसे मिलते हैं जो हमारे जीवन की दिशा परिवर्तित कर देते हैं, और जिनकी छाप हमारे मन–मस्तिष्क पर बरकरार रह जाती हैं। ऐसे ही हमारी संस्था के पितृ पुरूष श्री आई.एस. सलूजा जी, आपका महत्व हमारे जीवन संस्था में हमेशा बरकरार रहेगा। आपकी यादों को हमेशा संजोये हुए।

आपके सम्मान और सपनों को निश्चित रूप से पूर्ण करने में एक सहयोगी।

ज्योति पाल
विभागाध्यक्ष
बी.एड. विभाग

किसी ने खूब कहा है कि जीवन की उपयोगिता उसे किसी ऐसे कार्य में लगा देने में है जो जीवन के बाद भी रहे। ऐसे ही व्यक्तित्व रहे हैं, आदरणीय आई.एस. सलूजा जी समस्त जीवन शिक्षा के क्षेत्र को समर्पित कर, ऐसा मार्ग हम सभी के लिए प्रशस्त किया, जिस पर चल कर हम सभी आत्मसन्तुष्टि का अहसास सदैव करते रहते है। आप, आपके आदर्श सदैव हमारे साथ है। इस अटूट विश्वास के साथ सैम परिवार का शिक्षा विभाग।

आरती शर्मा

सैम ग्रुप के पितृ पुरूष ने हमें जो संरक्षण और सहयोग दिया उसके आधार पर ही हम निष्ठापूर्ण ढंग से अपने कर्तव्यों का पालन करते आये है। आगे भी उनके दिखाये रास्ते पर चलते हुए कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे।

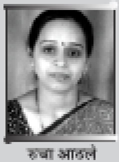

रुचा आठले
विभागाध्यक्ष
(गणित विभाग)

सैम ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स के संस्थापक एवं पितृपुरूष श्री आइ. एस. सलूजा को गणित विभाग, सैम कन्या महाविद्यालय भावभीनी श्रद्धांजली व्यक्त करता है। कर्मठ एवं मृदुल स्वभाव के धनी तथा सच्चे पथप्रदर्शक के रूप में स्व. श्री आई.एस. सलूजा सदैव हमारे प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। आपके आदर्श एवं आपका स्नेह हमारे साथ हैं और हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

''अश्रुपूरित श्रद्धांजली''

Sarita Agrawal (Goyal)
H.O.D- Dept. of
Comm. & Mgmt.

Tribute To Bade Sir

The candle that you lighted for this institution is still burning bright. We thank you, Sir, for the hope that you gave for this institution. Though we are saddened and in grief that you have left for your heavenly abode, we thank God for blessing us to be a part of the journey in SAM.

We promise you sir, that the flag that you have placed, we will keep it flying up high.

डॉ. मधुबाला श्रीवास्तव
प्रशासकीय अधिकारी

अद्भुत था................बड़े सर का वह 'सरदार वाला' जुमला

कुछ अहसासों के आगे अल्फाज़ बौने हो जाते हैं। 'बड़े सर' की छत्र–छाया में लगभग एक दशक के अनुभवों की यादें, भावनाओं का भारी बोझ शब्दों पर डाल रही हैं।

सैम का छोटा सा स्कूल भी उनके लिये मिशन से कम न था। आगे बढ़ने के लिये धैर्य, अनुशासन और ईमानदार कोशिशों का मूल मंत्र मैंने उनसे ही सीखा।

वे अपने लक्ष्य के प्रति पूरी गंभीरता से कर्मरत रहते। सत्य के प्रति उनका जबर्दस्त आग्रह था। एक और अद्भुत खासियत यह थी कि उन्होंने अपनी गहराइयों और ऊँचाइयों के बीच एक धरातल खोज रखा था, जहां से वे कभी नहीं डिगे।

जब कभी वे मूड में आकर अपने जीवन संघर्ष के प्रसंग सुनाते तो उनमें भी रोचकता भर कर कह उठते– '' सरदार हूँ न! ऐसे हार थोड़ी मान जाता''। उनका यह खुद को बात–बात में सरदार कहना किसी परिहास वश या धार्मिक कारणों से नहीं था। वे दृढ़ निश्चय व प्रबल इच्छा शक्ति के साथ जोशो–जूनून से भरे अपने व्यक्तित्व में 'सरदार' की छवि देखकर खुश होते और गर्व करते थे।

मेरी उनसे अन्तिम मुलाकात के समय वे काफी बीमार दिख रहे थे। शरीर शिथिल था, आवाज कमजोर पर आँखों में वही पहले जैसा दुलार। मुझसे कहा –'' कॉलेज तो तुमने बहुत अच्छे से सम्हाल लिया है.....स्कूल का भी ध्यान रखना।''

कभी–कभी स्कूल आफिस की तरफ पैर खींच ले जाते हैं। मन जोर से धड़क कर उस हकीकत से विद्रोह करने का कहता है कि ''हमारे बड़े सर, अब यहां नहीं हैं।''

पर निश्चय ही वे जहाँ कहीं होंगे, सैम से जुड़े किसी प्रसंग को चटखारे लेकर सुनाते कह रहे होंगे–''ऐसे हार थोड़ी मान जाता... सरदार हूँ न!''

***

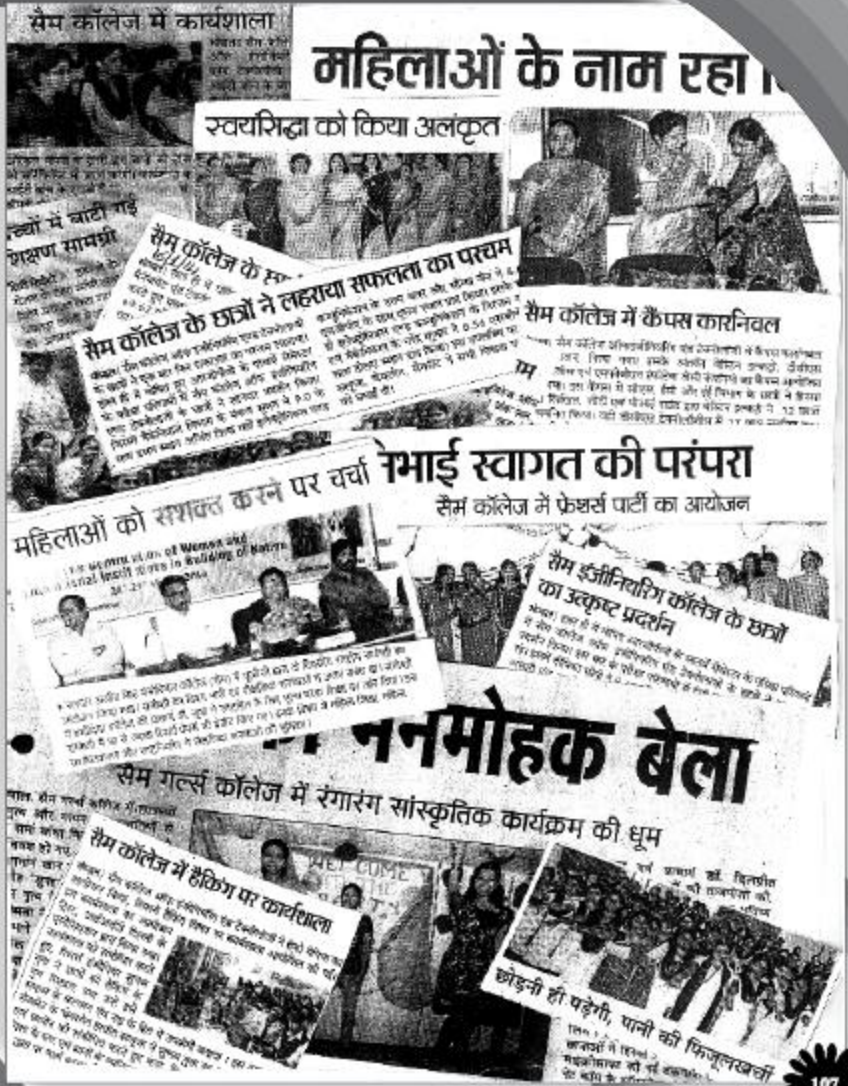

सैम कॉलेज में कार्यशाला

महिलाओं के नाम रहा

स्वयसिद्धा को किया अलंकृत

त्रों में बांटी गई
शिक्षण सामग्री

सैम कॉलेज के

सैम कॉलेज के छात्रों ने लहराया सफलता का परचम

सैम कॉलेज में कैंपस कारनिवल

महिलाओं को सशक्त करने पर चर्चा

भाई स्वागत की परंपरा

सैम कॉलेज में फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

सैम इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

नमोहक बेला

सैम गर्ल्स कॉलेज में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की धूम

सैम कॉलेज में हैकिंग पर कार्यशाला

छोड़नी ही पड़ेगी, पानी की फिजूलखर्ची

SAM College Glimbs